सुवर्णपुरी तीर्थ पूजन-विधान

(जिनायतन-जिनबिम्ब पूजा)

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

भगवान श्री कुन्दकुन्द-कहान जैन शास्त्रमाला, पुष्प–२२९

ॐ

श्री

सुवर्णपुरी तीर्थ पूजन-विधान

(जिनायतन-जिनबिम्ब पूजा)

સહજ ચિદાનંદ.

卐

-: प्रकाशक :-

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ-३६४२५०

प्रथम आवृत्ति प्रत : ३००० वि. सं. २०६७ ई.स. २०११

श्री सुवर्णपुरी तीर्थ पूजन-विधान(हिन्दी)के

❋ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ❋

श्री घाटकोपर दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल-मुंबई

(पूज्य गुरुदेवश्रीकी १२२वीं जन्मजयंती सुवर्णपुरीमें मनानेकी खुशालीमें)

यह पुस्तकका लागत मूल्य रु. 20=00 है। अनेक मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. 16=00 होती है उनमेंसे श्री घाटकोपर दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल, मुंबईकी ओरसे 50% आर्थिक सहयोग प्राप्त होनेसे विक्रय मूल्य रु. 8=00 रखा गया है।

मूल्य : रु. 8=00

मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
सोनगढ-३६४२५०
✆ : (02846) 244081

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

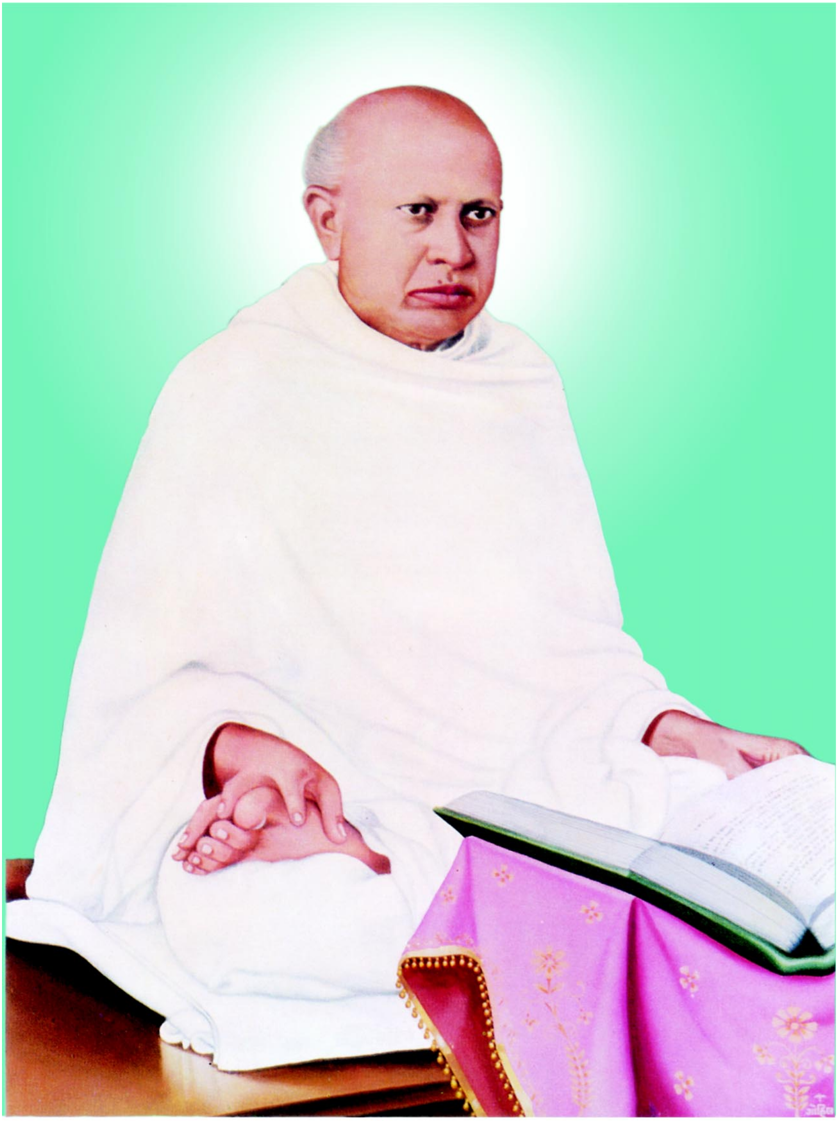

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैनधर्म ही सनातन सत्य है' ऐसा युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्धस्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस कालमें सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्‌घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान देकर भी मुमुक्षु समाज पर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि (सोल्लास) प्रवृत्ति नियमित चल रही है। स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमंदिरों एवं वीतराग जिनबिम्बोंसे भर गया।

साथ साथ प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीने भी पूज्य गुरुदेवश्रीकी भवनाशिनी वाणीका हार्द मुमुक्षु समाजको बताकर मुमुक्षुओंके अंतरमें जागृत करके सच्चे देव-शास्त्र-गुरुके प्रतिके भक्तिभाव सह भक्ति-पूजाकी अनेकविध रोचक गति-विधियोंके द्वारा नवपल्लवित किया है।

जिसके फलस्वरूप सुवर्णपुरीमें देव-शास्त्र-गुरुकी भक्ति–पूजनके विविध कार्यक्रमका आयोजन सदैव चलता रहता है। इस हेतुको ध्यानमें रखकर ट्रस्टकी ओरसे विविध पुस्तकोंका भी प्रकाशन हो रहा है।

पूज्य गुरुदेवश्रीके परम प्रतापसे ही सोनगढ एक स्वर्णनगरी बन गई है। चारों ओर आपके प्रतापसे भव्य विशाल जिनमंदिर व उनमें भाववाही जिनबिम्ब बिराजमान हो गये हैं। पूज्य गुरुदेवश्रीके प्रतापसे स्वर्णपुरी एक स्वानुभव तीर्थ तो बना ही है, पर ''तू परमात्मा है'के नाद निरन्तर गूँजता रहा है' ऐसा वातावरण सहज ही बन गया है व साथमें देव-शास्त्र-गुरु–गुण गुँजारव निरन्तर

स्वर्णपुरीमें गूँजते रहते है–जिससे यह ‘स्वर्णपुरी तीर्थ अध्यात्म-तत्त्वज्ञानके साथ-साथ (जिनायतन-जिनबिम्ब) मंडल विधान पूजा उन गुँजारवोंका एक रूप ही है।

इन पूजाओंमें सभी जिनायतनों--जिनबिम्बोंकी पूजा ली है, जिसमें वे जिनायतन पूज्य गुरुदेवश्री व पूज्य बहिनश्रीके कृपाभावसे बिना किसी आयोजनके सहज ही बन गये हैं, उनके बननेका इतिहास भी संक्षिप्तमें इन पूजाओंमें ले लिया है। सुवर्णपुरीमें जम्बूद्वीप एवं बाहुबली मुनिवर जिनायतन निर्माणाधीन है अतः उनकी पूजाओंको भी इस पुस्तकमें समाविष्ट कर लिया गया है।

इस पुस्तककी सभी पूजा आदि सर्व सामग्री हमारे प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. श्री व्रजलालभाई शाह वढ़वाणने देखकर हमें बहुत ही सहयोग दिया है अतः ट्रस्ट उनका आभारी है।

यह पुस्तक इस हेतुसे तैयार किया गया है कि सुवर्णपुरीके जिनायतनोंमें बिराजमान सभी जिनेन्द्र भगवंतोंकी पूजा समुच्चय विधानरूपमें तथा अलग-अलग भी हो सके।

आशा है कि यह नूतन संस्करणसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

पूज्य गुरुदेवश्रीका
122वाँ जन्म-महोत्सव
दि. 1-5-2011

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि0 जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

ॐ

नमः परमात्मने।

स्वर्णपुरी तीर्थ पूजन विधान

(जिनायतन-जिनबिम्ब पूजा)

मंगल स्तुति

(हरिगीत)

स्वर्णायतन है स्वर्ण भू पर, पूजते भविजन यहाँ,
इतिहास है स्वर्णिम अहो! राजे सीमंधर जिन जहाँ;
आनंद अंबुधि हृदय उछले दर्श प्रभु पाऊँ सदा,
जिनवृंद राजे स्वर्णपुरमें कहान किरपामृत सदा।

विदेही राजे जिनसभामें, दृश्य अनुपम देखिये,
मनहरन मूरत कुंद प्रभुकी, कौन उपमा लेखिये;
पंचकल्याणक प्रभुके भव्यजनके उर सने,
तिस समयकी आनंद महिमा कहत क्यों मुखसों बने।

वीरप्रभुके श्रुतभवनमें, कुंद परमागम लिखे,
देख मानस्तंभ उन्नत, भक्तके हैं सिर झुके;
मंदिर स्वाध्याय, मंडप प्रवचन, गुरु महिमा गा रहे,
मेरु पंच नंदी जिनजी स्वर्णपुर शोभा रहे।

बाहुबली अरु द्वीप जंबू रचना मंगलकार है,
भर नयन निरखुँ नाथ रचना, और वांछा ना रहे;
मम आज आतम भयो पावन, पूज सर्व जिनेश्वरा,
संसार सागर नीर नीवड्यो, अखिल तत्त्व प्रकाशिया।

मन ठठ मनोरथ भए पूरण, रंक मानो निधि लहीं,
कर जोड प्रभुके दास विनवे, कृपा मुझपर कर सही।

स्वर्णपुरी तीर्थ समुच्चय पूजा

(राग–सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान मंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
तू परमातमा है, ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी ॥

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्रावतरत अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, इति सन्निधिकरणम् ।

उज्ज्वल जल शीतल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहान-गुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः फलं० ।

(4)

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है ॥

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा ॥

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं ॥

विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं ॥

परमागम मंदिर अद्भुत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें ॥

पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं ॥

स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया ॥

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु–वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली ॥

प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे ॥

जंबूद्वीप रचना न्यारी है, शाश्वत जिन प्रतिमा प्यारी है।
गजदंत, कुलाचल, मेरुगिरि, विजयार्ध, वक्षार सुसुंदर है॥

विदेही सीमंधर युगमंधर, बाहु-सुबाहु जिन सोहे हैं।
भरतैरावतके शाश्वत जिन, सुवर्णपुरीमें पधारे हैं॥

दिव्यमूर्ति बाहुबली जिनकी, अति सुंदर अचरजकारी है।
गुरुकृपासे मेघामृत बरसे, गाजत जय जय जयकारी है॥

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है॥

जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो॥

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धर-स्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ऐसी मंगलमाल यह, जिन-गुरु-मात प्रताप,
भव-भव पाऊँ साथ तुम, स्वर्ग-मुक्ति दो आप।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

प्रश्न : श्रावक क्या करे ?

उत्तर : श्रावक तो हमेशा देवपूजा करे, देव अर्थात् सर्वज्ञदेव, उनका स्वरूप पहचानकर उनके प्रति बहुमानपूर्वक रोज रोज दर्शन-पूजन करे। पहले ही सर्वज्ञकी पहचानकी बात कही थी। स्वयंने सर्वज्ञको पहचान लिया है और स्वयं सर्वज्ञ होना चाहता है वहाँ निमित्तरूपमें सर्वज्ञताको प्राप्त अरहंत भगवानके पूजन–बहुमानका उत्साह धर्मीको आता है। जिनमन्दिर बनवाना, उसमें जिनप्रतिमा स्थापन करवाना, उनकी पंचकल्याणक पूजा–अभिषेक आदि उत्सव करना, ऐसे कार्योंका उल्लास श्रावकको आता है,–ऐसी इसकी भूमिका है; इसलिए उसे श्रावकका कर्तव्य कहा है! जो उसका निषेध करे तो मिथ्यात्व है और मात्र इतने शुभरागको ही धर्म समझे तो उसको भी सच्चा श्रावकपना होता नहीं—ऐसा जानो। सच्चे श्रावकको तो प्रत्येक क्षण पूर्ण शुद्धात्माके श्रद्धानरूप सम्यक्त्व वर्तता है, और उनके आधारसे जितनी शुद्धता प्रकट हुई उसे ही धर्म जानता है। ऐसी दृष्टिपूर्वक वह देवपूजा आदि कार्योंमें प्रवर्तता है। श्री समन्तभद्रस्वामी, श्री मानतुंगस्वामी आदि महान मुनियोंने भी सर्वज्ञदेवकी नम्रतापूर्वक महान स्तुति की है; एक भवावतारी इन्द्र भी रोम रोम उल्लसित हो जाये ऐसी अद्भुत भक्ति करता है।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर

वि.सं. 1997 (ई.स. 1941) में प्रतिष्ठित

वि.सं. 2013 (ई.स. 1957) में बना
उक्त मन्दिरका विस्तृतिकरण

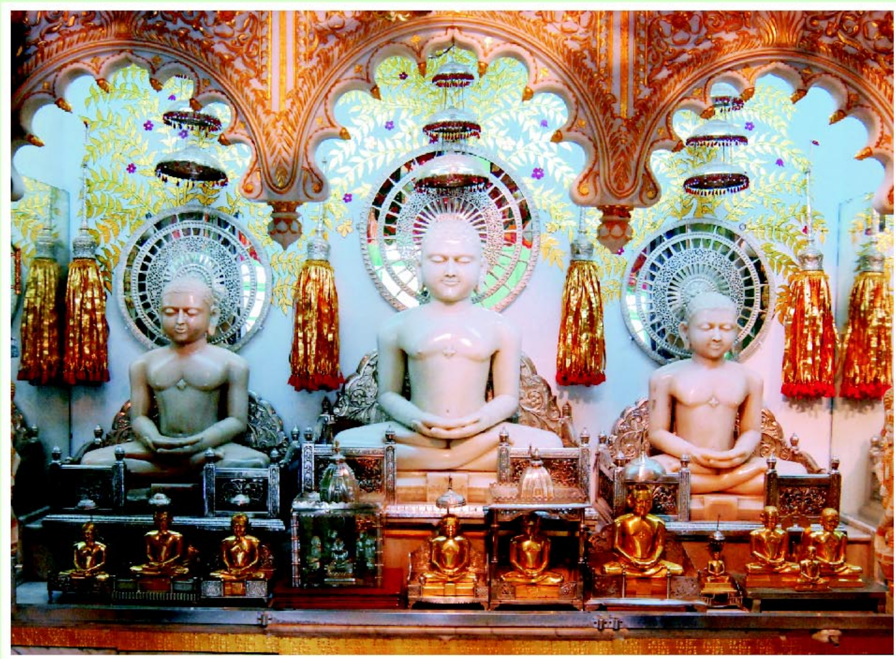

श्री शान्तिनाथ भगवान　　श्री सीमन्धरस्वामी　　श्री पद्मप्रभ भगवान

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवान
(जिनमन्दिरके ऊपरी भागमें)

श्री सीमंधर जिनमंदिरे विराजित

सर्व जिनेन्द्र पूजन

(छंद हरिगीतिका)

तीर्थ स्वर्णपुरी विषे जिनथल मनोहर है अति,
तिनमांही 'जिन'के बिंब सुंदर राजते पुण्यकी मही,
ते सकल जिनवर आयतनके पूजुं भक्ति भावसों,
वसु द्रव्य ले जिन पाय पूजों अष्ट अंग उछाहसों।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सर्व जिनप्रतिमाः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सर्व जिनप्रतिमाः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सर्व जिनप्रतिमाः ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(राग--आज हृदय पुलकित हो गाता)

क्षीरोदधिका निर्मल जल ले, चरण चढाऊँ श्री जिनराज,
प्रभुके चरणकमल मैं पूजुं जन्म मरण दुःख मेटन काज।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागीर चंदन कलशा भरि, तजने क्रोधादिक कषाय,
मोहमहातम नाशन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराय,
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्वल खंड बिना मैं लायो जिनवर पूजन काज,
अक्षयपदकी प्राप्ति हेतु मैं चरण चढ़ाऊँ श्री जिनराज।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

देवद्रुमके पुष्प सुगंधित भर-भर लायो पूजन काज,
कामबाण विध्वंसन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराज।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रसमय नैवेद्य सुसुंदर पातर लायो पूजन काज,
क्षुधारोगके नाशन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराज।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीप ले कनकथालमें अति उलसित हो मनवचकाय,
मोहनिशाके नाशन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराय।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग सुगंधित लेकर दशदिशमें खेऊँ जिनराज,
अष्टकर्मके नाशन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराज।

तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल खारिक उत्तम फल ले, भक्तिभाव भरि पूजन काज,
महामोक्षफल पावन कारण चरण चढाऊँ श्री जिनराज।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल, मलयाक्षत, पुष्प, चरु ले, दीप धूप अरु फल मंगाय,
जन्म मरण दुःख मेटन कारण, चरण चढाऊँ श्री जिनराय।
तीर्थस्वानुभव स्वर्णपुरीमें सीमंधर आदि जिनराय,
नमस्कार हो, नमस्कार हो, विदेही सीमंधरराय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमन्दिरमें विराजित प्रत्येक जिनेन्द्रके अर्घ

(गीता छंद)

जे शांत करत समस्त पातक, एक छिनमें नाथजी,
जिन नाम मंत्र प्रभावतें इन्द्रादि भए सनाथजी।
ते शांतिनाथ विनाश भवदधि राजते मम मंदिरे,
तिहीं तीर्थनाथ पवित्रको मो बारबार प्रणाम है।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित शांतिनाथ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कमलपत्र समान तन जिन पद्मप्रभ जिनदेवजी,
गुण अमित मूर्ति सु अटल, पद्माकर लसत स्वयमेवजी,
प्रभु अष्ट कर्म विनाशी अष्टम भूमहीं राजत भए,
तिहीं तीर्थनाथ पवित्रको मो बारबार प्रणाम है।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित पद्मप्रभ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद करते सकल जगको तथा मोह तिमिर हरे,
पै दोषरूप कलंक वर्जित अमल चन्द्रप्रभा धरे,
ते चन्द्रनाथ जिनेश चहते शिवरमा नायक भए।
तिहीं तीर्थनाथ पवित्रको मो बारबार प्रणाम है।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादि देवनिकरि नमति भगवान नेमिनाथ है,
मिथ्यात मतमय तिमिर नाशत, कर विहार सुस्वामि है;
धर तुर्थ ध्यान सु अंतमें प्रभु लोकके शिखर गए,
'जिन' स्वर्णनगरे राजते मो बारबार प्रणाम है।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी जननकर सदा जिनके पार्श्व अनुभवरूप है,
ते पार्श्वस्वामी भव्य भवफांसी निवारन भूप है।
ये विमल तनको त्याग 'सिद्ध', समाजमें जे स्थिर भए,
'जिन' स्वर्णनगरे राजते मो बारबार प्रणाम है।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लीलावती)

जल चंदन नैवेद पुष्प रु, दीप धूप फल अर्घ्य रचूँ,
जयघोष करावुं बीन बजाऊँ अर्घ्य चढाऊँ खूब नचूँ,

भावी जिनवर चरणकमलमें शत शत वंदन वारंवार,
करुणासागर दीनदयाला मम दुख टालो अर्ज हजार।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित धातकीद्वीपस्थ भावी जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जगतनाथ जग ईश हो, जगपति पूजे पाय,
मैं पूजुं नित भावयुत तारणतरण सहाय,
तुम समान समरथ नहीं तीन लोकमें कोय,
'सिद्ध' शिवालय राजते स्वामी हो शिर मोय।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित सिद्ध परमात्मने चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुन्दरी)

जल फलादिक द्रव्य सु लायके, नाचे गाय बजाय सु अर्घ्यतें।
आदि जिनजी पधारे मंदिरम् मात अरु गुरु, पूजत वंदितम्॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी)

जल, चन्दन सारं, अक्षत धारं, फूल चरु सारं, दीप धरों,
जिनदास सु धूपं, फल सु अनुपं, जय महावीरं, मुक्ति बसें।
तुम सन्मति नामं, वीर अतिवीरं, जय महावीरं, पूज करों,
तुम जनम सुदिने, सद्गुरुदेवं, स्वर्णसु विश्वं, धर्म करों॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे विराजित महावीर जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद : नयमालिनी, चंडी तथा तामरस)

सीमंधर गुणनंत नमस्ते, शान्ति, पद्मप्रभ, चन्द्र नमस्ते,
सर्वकर्म चूर सिद्ध नमस्ते, पंचमगतिमय नेमि नमस्ते;
ॐ ध्वनि जिन भावी नमस्ते, रत्नत्रयमय पार्श्व नमस्ते,
आदि अरु प्रभुवीर नमस्ते, गुरुकहान प्रताप नमस्ते।

(कुसुमलता छंद)

गिरनारीकी यात्रामें, गुरुको प्रभुदर्श उमंग जगी,
विदेहीप्रभुका विरह जगा, दर्शन बिन चैन न पड़ती थी।
गुरुभक्तोंने जिनमंदिरकी मंगल भावना भाई थी,
जिनमन्दिरके बननेकी गुरुवरसे सम्मति पाई थी।

मनहर प्रतिमाजी जयपुरसे बहिनश्रीबेन लाती थीं,
गुरुवरने त्रय देखी रोशनी, त्रय जिनबिंब बताती थीं;
कहा गुरुने भक्तोंसे भगवान पधारे हैं, जाओ,
धूमधामसे स्वागत करके स्वाध्यायमंदिर ले आओ।

उपशमरसमय प्रतिमाएँ लख, गुरु साष्टाँग नमन करते,
चलो चलो भगवान दिखाए, गुरुवर सबहीसे कहते;
श्री सीमंधर, शांतिनाथ अरु, पद्म प्रभुकी प्रतिमाएँ,
निरख निरख कर हर्षित होते भक्त सभी नाचे गाएँ।

विक्रम सत्तानवें फाल्गुन सुद, दूजको जिनवर राजे हैं,
देव देवेन्द्र प्रभुको पूजें रत्नोंकी वर्षा करते हैं।
पंचकल्याणक स्वर्णपुरीमें दैवी दृश्य निहारे हैं,
महिमावंत श्रीजिनवरके पुनित प्रसंग अनोखे हैं।

गंधर्व गुणगान गगनमें सीमंधरके गाते हैं,
नभमंडलकी शोभा अद्‌भुत कुमकुम केसर बरसे हैं।

हर्षानंदके दीप जलाकर भक्तिमाल चढ़ाते हैं,
जय जयके मंगल गीतोंको सुरनरनारी गाते हैं।

विदेहक्षेत्रके सीमंधरजिन भरतमें आज बिराजे हैं,
जिनके पंचकल्याणक मांहि सुर नर सब हर्षाए हैं।
दिव्य मूरति देखी प्रभुकी बार बार शिर नाए हैं,
जयवंतो जगमांहि जगतपति तुम गुण पार न पाए हैं।

जिनजी सोहे रत्न सिंहासन तीन छत्र सिर राजे हैं,
गुण अनंतके रंगोंसे मंगलमय स्वस्तिक छाजे हैं।
दिव्य गुणाकर देव पधारे अद्भुत तेज झलकते हैं,
विश्ववंद्य जिनवरको निरखत नयनन नहीं अघाते हैं।

भित्तिका पर सुंदर पौराणिक चित्रावलि सोहे हैं,
सम्मेदाचल यात्रा मंगल कहानगुरु संघ सोहे हैं,
वीरप्रभुकी देवपरीक्षा मथुरामें ऋषि आए हैं,
नमिनाथका समवसरण सीमंधर दीक्षा पाए हैं।

ऋषभदेव, जंबूस्वामी अरु शांतिप्रभुके गत भव हैं,
दे आहार देवकी मुनिको, मुनिरक्षा 'श्रीराम' करे हैं।
जिनमंदिर निर्माण हो, ऐसा युग गुरुवर लाए हैं,
आचार्योंको गुरु वंदते, सिद्धवरकूट गुरु आए हैं।

स्वर्णांकित इस गर्भगृहमें जिनजी मनको मोहे है,
ॐकार जिनमंदिरजीका अद्भुत अगणित सोहे हैं।
छतके सुंदर चित्रामोंमें अष्टदेवी ऐरावत है,
जलधारा होती जिनजी पर, मधुरध्वनिमें गावत हैं।

गिरिनगरके नेमप्रभुजी जिनमंदिरपे सोहे हैं,
शिखर मनोहर, कलश स्वर्णके ध्वज केशरिया मोहे हैं;
प्रभु पधारे स्वर्णपुरीमें गुरुको तृप्ति न होती है,
भगवती माता कनकथाल भर रत्नमणि बरसातीं हैं।

गुरुदेव अरु भगवती माता परमकृपा बरसाते हैं,
स्वर्णपुरीकी धन्य धराको जयघोषोंसे गाते हैं;
भगवती मातके निर्देशनसे मंदिर सुंदर शोभे हैं,
प्रभु चरणोंमें वंदन करते गुरुजीका मन मोहे हैं।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु सीमंधर जिनमंदिरे बिराजित सीमंधरादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

ऐसे जिन महान, तुम गुण महिमा अगम है,
कैसे करूँ बखान, तुम चरणोंमें हो वंदना।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

प्रश्न : देव-गुरु-शास्त्रकी ओरके भाव तो पराश्रितभाव है न?

उत्तर : भेदज्ञानीको तो उस समय स्वयंके धर्मप्रेमका पोषण होता है। संसारसम्बन्धि स्त्री-पुत्र-शरीर-व्यापार आदिकी ओरके भावमें तो पापका पोषण है; उसकी दिशा बदलकर–धर्मके निमित्तोंकी ओरके भाव आवें उसमें तो रागकी मन्दता होती है तथा वहाँ सच्ची पहचानका—स्वाश्रयका अवकाश है। भाई! पराश्रयभाव तो पाप और पुण्य दोनों हैं, परन्तु धर्मके जिज्ञासुको पाप तरफका लगाव छूटकर धर्मके निमित्तरूप देव-गुरु-धर्मकी तरफ लगाव होता है! इसका विवेक नहीं करे और स्वच्छन्द–पापमें प्रवर्ते या कुदेवादिको माने उसे तो धर्मी होनेकी पात्रता भी नहीं।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

श्री सीमंधर जिनेन्द्र धर्मसभा

वि.सं. 1998 (ई.स. 1942) में प्रतिष्ठित

धर्मकाळ अहो! वर्ते, धर्मक्षेत्र विदेहमां;
वीस वीस जहाँ गर्जे, धोरी धर्मप्रवर्तका ।
अचिंत्य भव्य ने दैवी, रत्नोना आरसा समुं;
प्रभुनुं ए समोसर्ण बार योजन व्यासनुं ।।

ऊँचे चतुरांगल जिन राजे,
इन्द्रो, नरेन्द्रों, मुनिराज पूजे;
जेवुं निरालंबन आत्मद्रव्य,
तेवो निरालंबन जिनदेह।

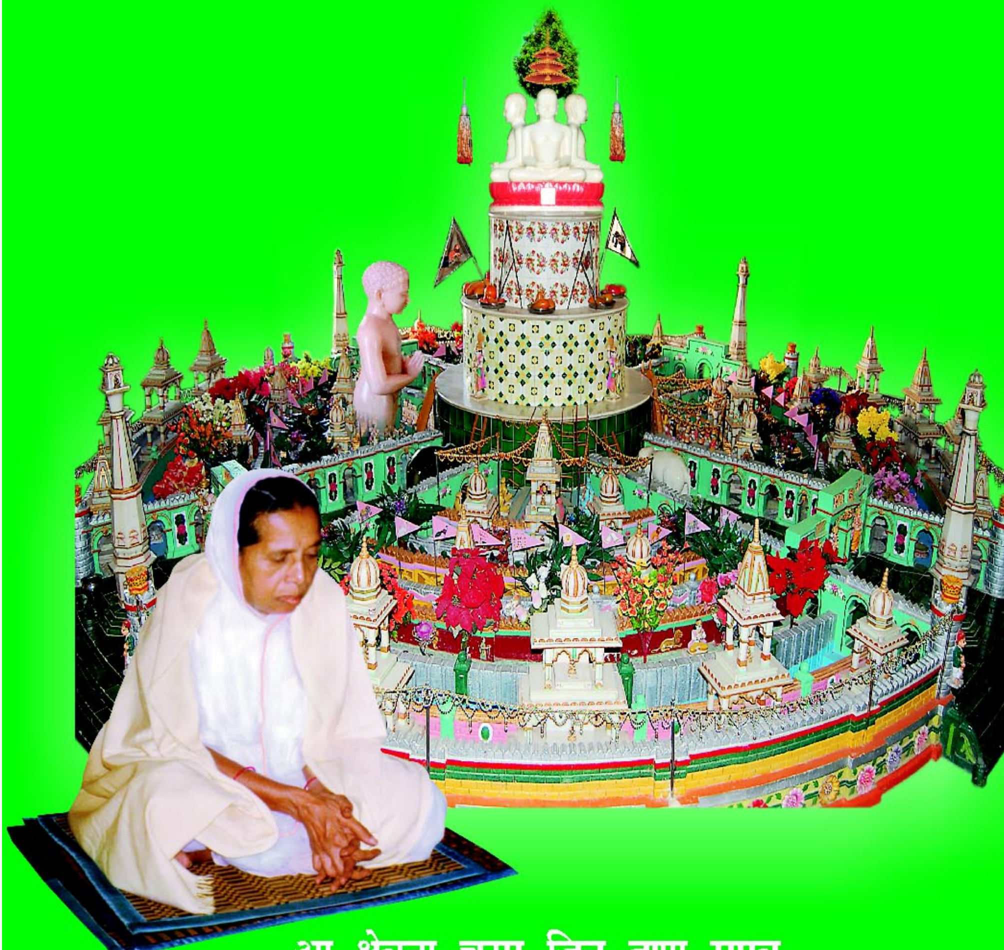

आ क्षेत्रना चरम जिन तणा सुपुत्र,
विदेहना प्रथम जिन तणा सुभक्त;
भवमां भूलेल भवि जीव तणा सुमित्र,
वंदु तने फरी फरी मुनि कुंदकुंद ।

श्री समवसरण जिनमंदिरे विराजित

सीमंधरादि जिन पूजा

(गीता छंद)

द्वीप जंबू भरतक्षेत्रे जहाँ जिनजी राजते,
स्वर्णपुरी तीर्थधाम माहिं समवसरण बिराजते।
कमलासने जिनजी बिराजे चतुर्मुख अति शोभते,
स्थापना करते प्रभुकी, भक्ति उरमें लायके।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा)

क्षीरोदधिको निर्मल पानी कनक पियाले लावो,
अपने कर ले हर्ष धारि करि, प्रभुके चरण चढ़ावो।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुँ तिन फल जन्म जरा दुःख नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घसि शुचि निर्मल जलसे मलय सुगंधित धारी;
ले शुभकारी जिनमंदिरको मन वच काय संवारि।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुँ तिन फल भवाताप दुःख नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल खंड बिना ले श्वेत वरण अधिकाई,
धार हरष उर ले अपने कर प्रभुजीके चरण चढाई।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल अक्षयपदकी प्राप्ति स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल महा गंधवारे लेके वरण भला सुखकारी,
प्रभुजीके चरण चढाऊँ निशदिन कामबाण नश जाई।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल दुःख मदनको नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विधविधके नैवेद्य सु लेकर प्रभुजीके सन्मुख जाऊँ,
क्षुधारोग विध्वंसन कारण भाव भक्ति उर लाऊँ।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल दुःख क्षुधाकूं नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीपकी ज्योति प्रकाशी, कंचन थाल भराऊँ,
अपने मुख ते मधुर गान करी जिनजीके गुण गाऊँ।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल मोह तिमिरका नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस विध गंध मिलाय धूप कर दशदिशिको महकाऊँ,
मनवचकाय शुद्ध करि वसु अरि कर्म सभी दहनाऊँ।

भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल करम अष्टका नाश स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारि खारिक शुद्ध ले आऊँ,
पिस्ता मनहर फल ले करके श्रीजीके चरण चढाऊँ।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल शिव लक्ष्मीकी प्राप्ति स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुह चरु दीप धूप फल लाऊँ,
अष्ट द्रव्य भरि थाल सजाऊँ शिवफल हेतु चढाऊँ।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा पर समवसरण अति सोहे,
पूजुं तिन फल अनर्घ्य पदकी प्राप्ति स्वयं ही हो है।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति॰

(सवैया इकतीसा)

भूमि चैत्य परसाद, प्रथम वेदी सु जान,
भूमि खातिका प्रमान, दूजी वेदी आनिये,
पुष्प वाटिका सु भूमि, आगे कोट दूसरो सु,
चौथी उपवन भूमि, तीजी वेदी जानिये।

पांचमी धुजा सु भूमि, कोट तीसरो निहार,
कल्पवृक्ष भूमि छठी, वेदी चोथी मानिये,
सातमी सु भूमि मंदिरन, की सु चौथी कोट,
फटकके रंग आगे, सभाभूमि जानिए।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरणे अष्टभूमि संयुक्त समवसरण संस्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंद भगवाननो अर्घ

(गीता)

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर दीप धूप सु लावना,
भरि द्रव्य आठों अर्घ्य मिश्रित गुरु चरण चढ़ावना।
कुंदकुंददेवने विदेह जाकर प्रभुके दर्शन किए,
ऐसे गुरुके चरण पूजुं भक्तिको उरमें लिए।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित कुंदकुंदाचार्यदेवाय पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

सीमंधर जिनेश्वर, समवसर्ण राजै,
ॐ ध्वनि है, जगत हित काजे,
प्रभु कुंदको ताप विरह सतायो,
कियो दर्श प्रभुको शुभाशिष पायो;
प्रभु उभय पूजें, महा अर्घ लाके,
चरणपद्म पाके, भव तीर जावे।

(छंद : लक्ष्मीवती, चाल मुनियानंद)

जंबू भरतक्षेत्रमें स्वर्णपुरी धाम है,
सीमंधर समवसरण नयन अभिराम है।
जिनालय अनुपम बना स्वर्णधाममें,
रचना समवसरण दिव्य आकार है।

भगवती मातकी स्मृति मंगलकार है,
दर्शन विदेही जिन महा धर्मवान है।
पूर्वभवमें किए दर्शन जिननाथके,
राजकुंवर देवराज कथा मंगलकार है।

प्रभुध्वनि सुन रहे स्मृति मंगलकार है,
असंख्यात वर्षोंका ज्ञान अविकार है।
धर्मसभा रची गई मातके ज्ञानसे,
दिव्य अद्भुत वह शास्त्र आधार है।

कुंदप्रभु वहाँ गये छूटे दिव्य नाद है,
सीमंधर-कुंद-मिलन नजरों देखी बात है।
ॐ ध्वनि सुन रहे द्वादश सभा महीं,
भव्यजनको अहो ! महासुखकार है।

भावीके तीर्थंकर होंगे राजपुत्र ये,
विदेह नगरी महीं आनंद अपार है।

भक्ति उछली हृदय समवसरण जो करें,
मानों विदेहक्षेत्र ही सुवर्णपुरी लाए हैं।

सुहावनी धर्मसभा बनी तीर्थधाममें,
तीन पीठिका सहित अष्टभूमि सोहे है।

विशाल धूलिशाल, अरु चैत्य प्रासाद है,
वाटिका, खातिका, वृक्ष भू सोहे हैं।
कल्पवृक्ष, ध्वजभूमि, मंदिरोंकी भूमि है,
सभाभूमि बारह, भक्तमन मोहे है।

पीठिका तीन पर दिव्य कमलासने,
जिनदेव चतुर्मुख दृश्य मनहार है।
कोई ध्वनि सुणते कोई मुनिवर बने,
कोई केवली बने मुक्तिको जात है।

ऐसे समवसरणमें स्तुति उत्कीर्ण है,
मात सम्यक्त्व-ग्रहण चित्र मनहार है।

विदेहके राजकुंवर अरु देवकुमार है,
कुंदकुंदप्रभु आचार्य पद पात है।
सीमंधरनाथके कल्याणक चार हैं,
गुरुदेव अरु मात वंदना करत है।
मंगल स्तुति गानसे समवसरण गूँजता,
नितप्रति भक्त जिननाथको नमत है।
प्रताप गुरु कहानका स्मरण चंपा मातका
रचना अद्भुत बनी स्वर्णपुरी धाममें।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु समवसरण स्थित सीमन्धर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

समवसरण जिनराजकी, गुणमाला सुविशाल,
भक्तिभाव सह वंदते भविकजन त्रयकाल।

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री सीमंधरस्वामी मानस्तंभ
वि.सं. 2009 (ई.स. 1953)में
प्रतिष्ठित

श्री मानस्तंभे विराजित श्री सीमन्धरस्वामी

हे जिनवर ! तुज चरणकमळना भ्रमर श्री क्हान प्रभावे,
जिन पाम्यो, निज पामुं अहो ! मुज काज पूरां सौ थावे;
—आश मुज करजो रे पूरी,
उभय अणहेतुक-उपकारी.

मानस्तंभ जिनायतन विराजित

सीमंधरजिन पूजा

(आज हृदय पुलकित हो गाता)

सौराष्ट्रदेशके स्वर्णपुरीमें उन्नत मानस्थंभ है,
सीमंधर जिन यहाँ बिराजै हरे मानीका दंभ है।
भरतक्षेत्रकी स्वर्णधरा यह साधकका विश्राम है,
गुरु कहान अरु बहिनश्रीका आशीष यह अभिराम है।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणं।

(गीता)

नीर निरमल क्षीरदधिको, कनकझारीमें भरों,
अति विनयसुँ मनवचनकाय, आप कर ले अनुसरो,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ जलसों, मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घसि सुगंधित मलय चंदन रतन पातर धारियो,
तजि क्रोध मान रु लोभ माया, भक्ति वसि ले टारियो,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ चन्दन मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल खंड बिन शुभ जान मुक्ता फल धरे,
इक चित्त शुद्ध संवारि आछे सुभग पातरमें भरे,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ अक्षसों, मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

देवद्रुमके पुष्प उज्ज्वल, गंध करि भरपूर है,
सो लेय के कर आपने मैं खड़ों देव हजूर है,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ फूलसुं मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य षट्रस पूरि सुंदर तुरत करमें लाईयो,
धरि भले पातर मांहि उरमें हरष बहुत बढ़ाइयो,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ चरुसों मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतन दीपक कनकपातर धार कर-युगमें लिए,
अति हुलसीके चित मन-वचन शुभ जोग जिन थुति मैं किये,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ दीपसुं मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशविधि लाय सुंदर अगर आदि मिलायजी,
मैं भक्ति भावन आपने कर अग्निमांहि जरायजी,

सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ गंधसों मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल लौंग खारक सुभग अनफल लाइयो,
धरि आप करमें भक्ति चित करी पूजतें उमगाइयो,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ फलसों मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल मलय अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फला सही,
वसु द्रव्यका शुभ अर्घ्य लेकर, चालिये पुन्यकी महीं,
सीमंधरजी मूले ऊपरी, शोभते अभिराम हैं,
मैं जजौं मानस्तंभ अर्घ्यसों मोक्षसुखको धाम हैं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(अनुष्टुप)

दूर है धूलिशालमें, मानस्तंभ सभा महीं,
बनी रचना स्वर्णपुरमें, शोभती उत्तम यहीं।

(आज हृदय पुलकित हो गाता)

गुरुप्रतापसे जिनमंदिर बहु सोहे सुवरणधाम रे,
जिनमंदिरके प्रवेशद्वार पर मानस्तंभ अभिराम रे।

'तू परमातम'के नादोंसे जगा रहे गुरु कहान रे,
भक्तोंको जिनविभव दिखाकर देते मुक्ति दान रे। गुरुप्रताप०

भक्तजनोंको हुई भावना समवसरण दरबार रे,
मानस्तंभ विराजित हो यहाँ, स्वप्न हुआ साकार रे। गुरुप्रताप०

त्रेसठवीं गुरु जन्म जयन्ती याद भक्तको आती है,
त्रेसठ फूट मानस्तंभ सोहे प्रभु दरबार दिखाती है। गुरुप्रताप०

शिलान्यासकी मंगलविधिको करतीं भगवती मात रे,
वेगनके वेगन भर-भरके, शिलापट ले आ रहे। गुरुप्रताप०

गहरी गहरी नींव डली थी दीर्घदृष्टिके साथ रे,
सुंदर धवल शिलासे निर्मित सोहे मानस्तंभ रे। गुरुप्रताप०

प्रथम पीठिका कुंद सीमंधर मिलन मधुर अभिराम है,
नेमि प्रभु अरु पंच परमेष्टि वसु मंगल मनहार है। गुरुप्रताप०

द्वितीय पीठिका कहान गुरुवर सभा अरु दिव्य ज्योत है,
गिरा गिरे धरसेन मुनिकी कुंदप्रभु श्रुत बोध है। गुरुप्रताप०

तृतीय पीठिका ध्वजदर्शन, अरु दीक्षा मल्लिनाथ है,
मानस्तंभ अभिषेक अरु, ऋषभमुनिको दान है। गुरुप्रताप०

ऊपर नीचे नाथ चतुर्दिश माल घंट मन मोह रहे,
स्वर्णकलशकी शोभा न्यारी, ध्वज केशरिया फरक रहे। गुरुप्रताप०

धर्मस्तंभ यह जिनवरजीका जिनदरबार दिखाता है,
आओ ! आओ ! भक्त सभी यह आत्मिक शांति जताता है। गुरुप्रताप०

किस विध वंदू किस विध पूजुं धर्मविभव दरबार रे,
अष्ट द्रव्यसे थाल सजाऊँ वंदन वारंवार रे। गुरुप्रताप०

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु मानस्तंभे बिराजमान सीमन्धर जिनेन्द्राय महाअर्घं०

(अनुष्टुप)

मानस्तंभ स्वर्णपुरे, सीमंधरजिनका अहा,
वन्दते, पूजते जो है, होत है मंगल महा।

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री जैन स्वाध्यायमन्दिर

वि.सं. 1994 (ई.स. 1938) में उद्घाटित

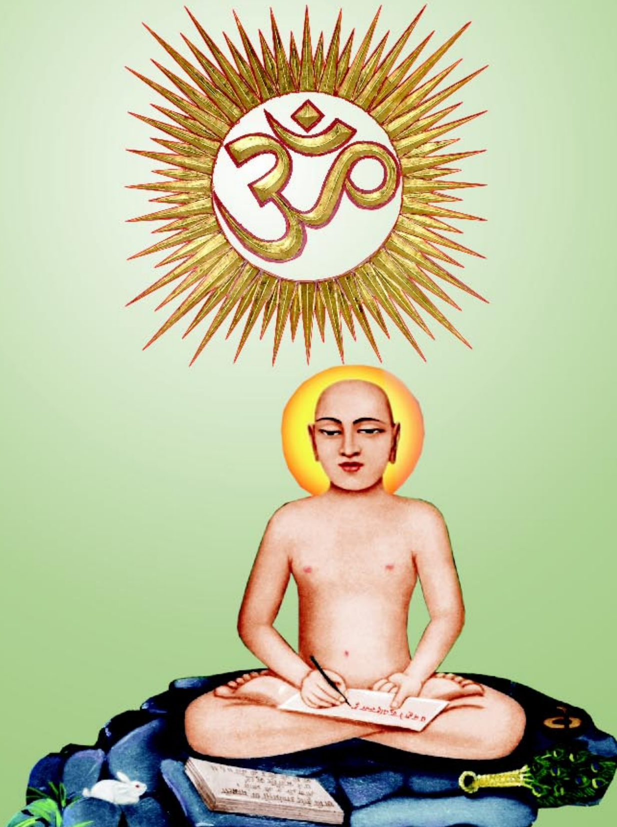

वि.सं. 1997 (ई.स. 1941) में प्रतिष्ठित

श्री समयसारजी जिनवाणी माता

स्वाध्यायमंदिरे विराजित

समयसार जिनवाणी पूजा

(दोहा)

स्वर्णपुरी तीरथ परम, है रमणीय सुथान,
भक्तिभावसे मैं नमूं, होय पापकी हान;
अनुभूति तीरथ धाममें, विराजे गुरु कहान,
समयसार जिनवाणीकी पूज, करुँ भव हान।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी माता ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी माता ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी माता ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

स्वर्णझारी रतन जड़िके, मांहि गंगा जल भरुँ,
प्रभु कुंदवाणी पूज करके, जन्म मृत्यु जरा हरुँ।
संसार उदधि उबारनेकुं पूजिये जलसों सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जाकी सुगंध थकी अहो, अलि गुंजते आवे बहु,
सो मलय संग घसाय केसर पूज जिनधुनिको सहु,
भवाताप निवारनेको पूज चंदनसो सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंडित अति ही सुंदर जोति शशि सम लायके,
शुभ शालि उज्ज्वल धोयकर जिनवाणीजीको चढ़ायके,
पद अक्षय कारण लेय भविजन अखत सों पूजों सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है मदन दुष्ट अत्यंत दुर्जय हने सबके प्रान ही,
ताके निवारण हेतु कुसुम मंगाय रंजन घ्रान ही,
जाकी सुवास लुभाय षटपद दौड़ी आवे हैं सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै कामबाणविध्वंसशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसपूर रसना घ्रान रंजन चक्षु प्रिय अति मिष्ट ही,
उत्तम लियाय मधुर सुंदर क्षुधा होवे नष्ट ही;
भरथाल कंचन विविध व्यंजन लेयकर पूजों सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य गर्भित ज्ञान जाको मोह निजवश कर लियो,
अज्ञान तममें पड्यो चेतन चतुरगति भरमन कियो।
छिनमांही मोह विध्वंस होवे पूज दीपक सों सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अगर अंबर वास सुंदर धूप प्रभु ढिग खेवही,
ये दुष्ट कर्म प्रचंड तिनको होय ततछिन छेवही।

सो कर्म अष्ट जराय लेकर धूप मैं पूजूं सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल लोंग पिस्ता लेय शुद्ध सम्हाल ही,
सैकार-दाख अनार केला तुरत टूटे डाल ही;
फल लेय उत्तम हेत शिवके भव्यजन पूजें सदा,
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरमें समयसारको वंदना।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय)

जन्म मृत्यु जल हरे, गंध आताप निवारे,
तंदुल पदके अखय मदनकूं सुमन विदारे;
क्षुधा हरण नैवेद्य, दीपतें ध्वान्त नसावे,
धूप दहे वसु कर्म मोक्ष सुख फल दरसावे;

ए वसु द्रव्य मिलायके अर्घ प्रभुको कीजिए,
कर पूज समयसारकी, भव सफल कर लीजिए।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु विराजित समयसार जिनवाणी मातायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(तोटक)

जिनवाणी प्रभु यह वीर तणी,
प्रभु कुंद रची, विदेह सुणी;
जिन आत्मविभवसुँ प्रचूर महा,
गौरवमय यह स्वर्णधाम हुआ।

(28)

(राग–मेरी भावना)

जयवंतो गुरुराज जगतमें समयसारको प्राप्त किया,
स्वानुभवको पाकर गुरुने अध्यातमका दान दिया।
'तू परमातम'के नादोंसे स्वर्णपुरी ये गुंज उठी,
'समझाय छे कांई' सिंहनादोंसे स्वर्णधरा ये धन्य बनी।
'स्टार ऑफ इन्डिया'में गुरु रहते, अनुभव वाणी वरसाते,
श्रुतपिपासु भीड़ लगी, गुरुभक्त भावना यह भाते।
बनाएँ खंड विशाल जहाँ पर श्री गुरुदेव निवास करे,
विस्तृत भूमि मध्य वहाँ, ये मंगल शिलान्यास करे।
भव्य भवन बनने पर गुरुने 'स्वाध्याय मंदिर' नाम दिया,
क्यों न ताकमें करें बिराजित समयसारजी शास्त्र महा?
गुरु भावना सुन भक्तोंके हियमें छाया हर्ष अपार,
समयसारजी ग्रंथराज पर, होवे प्रवचन मंगलकार।
सद्गुरुदेवको बिनती करने चले भक्तजन उनके पास,
पधारो गुरुवर 'स्वाध्याय-मंदिर', भक्तजनोंकी यह अभिलाष।
साथ हुई स्वागत यात्रामें, पूज्य बहिनश्री चंपामात,
समयसारजी रजतथालमें गाती मंगल गीतों साथ।
'समयसारजी करें विराजीत, 'बहिन'', गुरुका यह आदेश,
'भगवती' शब्दसे किया विभूषित, कहानगुरुका यह आशीष।
यादगार था उत्सव मनहर स्वाध्याय मंदिर खूब सजा,
उल्टे बागकी याद दिलाता, मानों 'स्टीमर' ही न बना?
श्रुतामृतके वाक्य सुमंगल दिवारों पर अंकित हैं,
मंदिर मंगल, गुरुवर मंगल, मंगलमय वह उत्सव है।
स्वाध्यायमंदिर बना सुसुंदर, कहानगुरुने वास किया,
पैतालिस वर्षो तक गुरुने आतमका ही ध्यान किया।

अनुभव भीगे वचनामृत हैं गूँज ऊठे दुनियाभरमें,
चैतनवंत प्रकाश दिव्य महा, झलक रहा गुरु अंतरमें।

श्रुतलब्धिवंत गुरुराज यह भारतके भगवंत अहो,
अध्यातमकी मंगलमूरति, जगके तारणहार अहो।

मुक्तिपंथ नित्य सुनाते, सूक्ष्म तत्त्व प्रकाश अहो,
भक्तों के जीवन शिल्पी जयवंत रहो जयवंत रहो।

चित्रावलि दीवारों पर है आदि जिनका पूर्व अहो,
मल्लिनाथ अरु भरत, प्रद्युम्न, लव-अंकुश वैराग्य अहो।

चेलनाजीका धर्मप्रेम अरु, हनुमान वैराग्य अहो,
ॐ ध्वनि, स्वस्तिक सुवर्णमय, स्वाध्याय मंदिर दिव्य अहो।

पृथ्वी सरीखे पत्र बनाऊँ, वृक्ष समूहोंकी कलमें,
समग्र समुद्रकी स्याही रचाऊँ तो भी न तृप्ति अंतरमें।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु स्वाध्यायमंदिरे विराजित समयसार जिनवाणी मातायै महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

वंदन कर पूजन करें, समयसारकी आज,
गुणमाला कुंदकहानकी गूंथ भक्तिके साथ।

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इस पंचमकालमें हमें आपके जैसी परमात्मदशाका तो आत्मामें विरह है और इस भरत क्षेत्रमें आपके साक्षात् दर्शनका भी विरह है! नाथ! आपके दर्शन बिना कैसे रह सके?—इस प्रकार भगवानके विरहमें उनकी प्रतिमाको साक्षात् भगवानके समान समझकर श्रावक हमेशा दर्शन-पूजन करे।—''जिन प्रतिमा जिनसारखी'' क्योंकि धर्मीको सर्वज्ञका स्वरूप अपने ज्ञानमें भास गया है, इसलिए जिनबिम्बको देखते ही उसे उसका स्मरण हो जाता है। नियमसार टीकामें श्री पद्मप्रभमलधारि मुनिराज कहते हैं कि जिसे भवभयरहित ऐसे भगवानके प्रति भक्ति नहीं वह जीव भवसमुद्रके बीच मगरके मुँहमें पड़ा हुआ है। जिस प्रकार संसारके रागी युवा प्राणीको स्त्रीका विरह खटकता है और उसके समाचार मिलते प्रसन्न होता है, उसी प्रकार धर्मके प्रेमी जीवको सर्वज्ञ परमात्माका विरह खटकता है, और उनकी प्रतिमाका दर्शन करते या संतों द्वारा उनका सन्देश सुनते (शास्त्रका श्रवण करते) उसे परमात्माके प्रति भक्तिका उल्लास आता है। ''अहो मेरे नाथ! तनसे–मनसे–धनसे–सर्वस्वरूपसे आपके लिये क्या करूँ!'' जो मनुष्य जिनेन्द्र भगवानको भक्तिसे नहीं देखता तथा उनकी पूजा-स्तुति नहीं करता उसका जीवन निष्फल है और उसके गृहस्थाश्रमको धिक्कार है! मुनि इससे ज्यादा क्या कहे? इसलिए भव्य जीवोंको प्रातः उठकर सर्वप्रथम देव-गुरुके दर्शन तथा भक्तिसे वन्दन और शास्त्र-श्रवण कर्तव्य है,—अन्य कार्य पीछे करना चाहिए।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

श्री महावीर-कुंदकुंद दिगम्बर जैन परमागम मंदिर
वि.सं. 2030 (ई.स. 1974) में प्रतिष्ठित

शासननायक भगवान श्री महावीरस्वामी

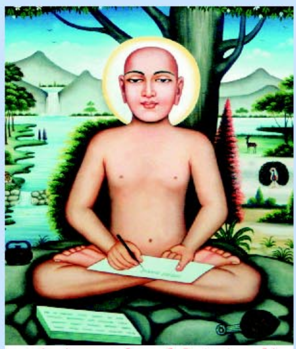

भरतक्षेत्रके महासमर्थ आचार्य श्री कुंदकुंदाचार्य देव

श्री पंच-परमागम जिनवाणी माता

भगवान श्री कुंदकुंदाचार्यदेव चरणचिह्न

परमागम मंदिर विराजित

श्री महावीर जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

वीरनाथ जिनराज सुरासुर पद जजैं,
गर्भ जन्म तप ज्ञान विषे सुरनर जजैं,
करुणानिधि भगवान अरज सुन लिजीए,
अत्र तिष्ठ जिनराज स्वहित मम कीजिए।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(गजल)

पद्मद्रह नीर शुचि लेकर, रतनझारीमें धारा है,
चरण जिनराजके पूजों मरण दुःख सर्व टारा है।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधित गंध अलि आवे, सरस चंदन मंगाया है,
जन्मको ताप अनिवारी प्रभुजीने हटाया है।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

शरदशशि श्वेत सुखकारी, अक्षतके पुंज शुभ दीजे,
सुगुण अक्षत प्रकाशनको जिनेश्वरके चरण पूजे।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुमवर देवतरु लाके, प्रभुके चरण ध्याता हूँ,
कुसुमशर मान मर्दनको, अनुपम सुगुण गाता हूँ।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल मोतीन करवायो, चरु उत्तम सु भर लायो,
क्षुधाके नाश कारणकूँ, चढ़ाऊँ वीरप्रभु पायो।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुके चर्ण पूजनको रतनमय दीप कर धारो,
महातममोहनाशनको प्रभुके चरण पर वारो।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगरादि शुचि लेके बनावो धूप सुखकारी,
कर्म अरि नाश करनेको जजो जिनराज हितकारी।

श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल सार शुचि लेके, प्रभुके चर्ण चित दीजे,
महाफलमुक्ति पा लीजे सुगुन जिनराज भज लीजे।
श्री महावीर जिनवरके, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादिक द्रव्य शुचि लेकर अरघ उत्तम बनाया है,
सभी विधि बंध नाशनको प्रभु पदमें चढ़ाया है।
महावीर जिन भवतारी, चरणको शीश नाता हूँ,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुण निधि गीत गाता हूँ।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदकुंदाचार्यनो अर्घ

(त्रिभंगी)

शुभ निर्मल नीरं, गंध गहीरं, तंदुल पहुप सु चरु ल्यावे,
पुनि दीप सु धूपं फल सु अनुपं अरघ लेय प्रभु गुण गावे,
पोन्नुरवासी कुंदकुंददेवा सीमंधरजिन दर्श करं,
मैं पूजुं ध्याऊँ, गुणगण गाऊँ, शीश नमावुं अघहरणं।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित कुंदकुंदाचार्यदेव चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमागम अर्घ्य

(दोहा)

महावीर जिनदेवकी, ॐ ध्वनि सुखकार,
गणधरजी रचना करे, बारह अंग उदार।
कुंदकुंद आचार्यवर, पंच परमागम सार,
रचना करी उत्तम महा, नमूँ भक्ति उर धार।
अशरीरताके लिए, समयसार है ग्रंथ,
विस्तार रुचि जीवको, रचा मुनि निर्ग्रंथ।
प्रवचनसार ग्रंथ है, दिव्यध्वनिका सार,
मध्यमरुचि जो जीव हैं, उनको है हितकार।
पंचास्तिकाय संग्रह महा, सूक्ष्म परम गंभीर,
संक्षेप रुचि जीव जो, वे पावे भवतीर।
निजभावना हेतु ही, नियमसार रचाय,
वीतराग चारित्रका, वर्णन मंगलदाय।
अष्टपाहुड़जी ग्रंथमें, अष्ट विषय सुखदाय,
अष्टकर्मको नाश करि, अष्टम भू पहुँचाय।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे शीलापट्टे उत्कीर्ण श्री समयसार, श्री प्रवचनसार, श्री नियमसार, श्री पंचास्तिकाय, श्री अष्टपाहुड़ सर्व जिनमुखोद्‌भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(राग : आवो आवो सीमंधरनाथ)

ओ! महावीर दयाल, तारक बिरुद धरो,
प्रभु तूँ तारणहार भवोदधि पार करो।
गुरुगिरा स्वर्ण मंझार, स्वाध्यायमंदिरमें,
बहु श्रोताजनकी भीड़, वाणी सुननेमें।

हो यदि खंड विशाल, सुवरण नगरीमें,
तो सुन पायें बहुजीव वाणी अन्तरमें।
गुरु जन्म जयंती वर्ष अस्सी मुंबईमें,
हुआ निर्णय मंगलकार, खंड विशाल बने।

भावें भावना भक्त, यह श्रुतमंदिर हो,
अरु उत्सव मंगल होय, सुवरण नगरीमें।
श्रुतमंदिर देखन काज, विध-विध नगर गये,
रचना होवे अद्भुत, इस श्रुतमंदिरमें।

इटलीसे आई मशीन, अक्षर टाँकनको,
गिनते पंडितरत्न, अक्षर, माप अहो।
पोने चार लाख, अक्षर गिनत भये,
पांचो परमागम पूर्ण जिसमें समा गये।

धवल शिला पर वे सब उत्कीर्ण भये,
स्वर्ण अक्षर अरु रंग जिन पर खूब खिले।
कुंदकुंद भगवान मंगल शोभ रहे,
अरु तिनके श्रीपद चिह्न भवि मन मोह रहे।

अमृतचन्द्र मुनि इन्द्र सोहे अति प्यारे,
श्री पद्म प्रभमलदेव मुनिवर जगतारे।
श्रीगुरुवरने स्वप्नमें जो पट देखे,
वैसे ही यह पट्ट, जैसे थे देखे।

पच्चीसोंवाँ निर्वाण उत्सव वर्ष अहो,
प्रतिष्ठा मंगलकार, हुई थी वीर प्रभो।
चित्रावली सोहे है तीरथधामोंकी,
भवावली आदिनाथ, महावीरदेवाकी।

प्रतिष्ठा मंगलकार हजारों जन आए,
जयवंतो जिनवरदेव, गुरु जयघोष करे।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु परमागममंदिरे बिराजित महावीर जिनेन्द्राय, कुंदकुंदाचार्यदेव चरणकमलाय तथा पंच परमागमेभ्य: इति सर्वेभ्य: पूजनार्थे महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मुख अनंत होय मुझ, मुख मुख जीभ अनंत,
प्रभुवर तेरे गुणनका, सन्त न पावे अन्त।

॥ इत्याशीर्वाद: परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

सर्वज्ञदेवकी पूजा, धर्मात्मा गुरुओंकी सेवा, शास्त्र-स्वाध्याय करना श्रावकका कर्तव्य है—ऐसा व्यवहारसे उपदेश है। शुद्धोपयोग करना यह तो प्रथम बात है। परन्तु वह न हो सके तो शुभकी भूमिकामें श्रावकको कैसे कार्य होते हैं उसे बतानेके लिए यहाँ उसे कर्तव्य कहा है—ऐसा समझना। इसमें जितना शुभराग है वह तो पुण्यबन्धका कारण है और सम्यग्दर्शन सहित जितनी शुद्धता है वह मोक्षका कारण है। सम्यग्दर्शन प्राप्त कर मोक्षमार्गमें जिसने गमन किया है ऐसे श्रावकको मार्गमें किस प्रकारके भाव होते हैं आचार्यश्रीने उसे बतलाकर श्रावकधर्मको प्रकाशित किया है। ऐसा मनुष्य-अवतार और ऐसा उत्तम जैन-शासन पाकर हे जीव! उसे तू व्यर्थ न गँवा। प्रथम तो सर्वज्ञ–जिनदेवको पहचानकर सम्यग्दर्शन प्रकट कर, इसके पश्चात् मुनिदशाके महाव्रत धारण कर, जो महाव्रत न पाल सके तो श्रावकके धर्मोंका पालन कर और श्रावकके देशव्रत धारण कर।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

श्री दिगम्बर जैन पंचमेरु-नंदीश्वर जिनालय
वि.सं. १९४१ (ई.स. १९८५)में प्रतिष्ठित

श्री आदिनाथ भगवान

श्री धातकी विदेहके भावी तीर्थंकर

श्री जम्बूभरतके भावी महापद्म तीर्थंकर

श्री पंचमेरु-नंदीश्वर और जिनेन्द्र भगवंत

नंदीश्वरद्वीप जिनमंदिरे बिराजित

नंदीश्वर-पंचमेरु आदि जिनेन्द्र पूजा

(अडिल्ल छंद)

अष्टम द्वीप नंदीश्वर स्वर्णे बिराजते,
पंचमेरुके जिनजी मंगलकार है,
सो जिनवर मम दिव्य सदा उरमें वसो,
स्वर्णिम है इतिहास स्वर्णपुर तीर्थका।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित आदिनाथ, महापद्मनाथ, धातकी पूर्वविदेहस्थ भावी जिनेन्द्र, पंचमेरु-नंदीश्वर जिनेन्द्राः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आहवाननम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित आदिनाथ, महापद्मनाथ, धातकी पूर्वविदेहस्थ भावी जिनेन्द्र, पंचमेरु-नंदीश्वर जिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित आदिनाथ, महापद्मनाथ, धातकी पूर्वविदेहस्थ भावी जिनेन्द्र, पंचमेरु-नंदीश्वर जिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

(रेखता चाल)

नीरदधि क्षीर सम लायो, कनक भृंगार भरवायो,
जरा मृत रोग दुःख पायो, अबै तुम चरण ढिग आयो।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्यः पूजनार्थे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदनं सुरभिजुत लायो, संग करपूर घिसवायो,
तुम्हारे चरण चढ़वायो, भव आताप नसवायो।

द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्यः पूजनार्थे संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

चंदसम तंदुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं,
पूज तुम चरण ढिग धारं, अखयपद काजके कारं।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्यः पूजनार्थे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पुष्प शुभ गंध जुत सोहे, सुगंधित तास मन मोहे,
जजत तुम मदन क्षय होवे, मुक्तिपुर पलकमें जोवे।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्यः पूजनार्थे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस व्यंजन लिया ताजा, तुरत बनवाइया खाजा,
जजो तुम चरण जिनराजा, क्षुधादुःख पलकमें भाजा।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्यः पूजनार्थे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ ज्योति धारी है,
होत दश दिश उजियारी, धूम मिस पाप जारी है,
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्य: पूजनार्थे मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

सरस शुभ धूप दशअंगी, जरावत अग्निके संगी,
करमकी सैन चतुरंगी, पूजतें पाप सब भंगी।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्य: पूजनार्थे अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

मिष्ट उत्कृष्ट फल लायो, अष्ट अरि दुष्ट नसवायो,
चरण तुम पूजने आयो, मोक्षपुर पलकमें जायो।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्य: पूजनार्थे मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

दरव आठों जु लीना है, अरघ करमें नवीना है,
पूजतें पाप छीना है, भक्त कर-जोड़ किना है।
द्वीप नंदीश्वर जिन राजे, मेरु पन मध्यमें छाजे,
भावी जिनराजजी राजे, गिरामृत पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनेन्द्रेभ्य: पूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् नि०

प्रत्येक अर्घ्य

(गीता)

जल भलो चंदन लेय अक्षत, फूल चरु दीपक सही,
फल आदि द्रव्य मिलाय आठों, भरे पातर मधि लही।

स्वर्णपुरमें तीर्थ जिनथल, नंदीश्वर जिन अघहरा,
ते जजों मन वच काय अर्घ सु सकल वांछित सुखकरा।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित सर्व जिनबिंबेभ्यः चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद नाराच)

गंध जल अक्षतादि पुष्प चरु लाईए,
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ्य ले चढ़ाईये,
तीर्थधाम स्वर्णमें, पंचमेरु है सही,
करें स्तुति गान जो पावें शिवकी मही।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित पंचमेरोः अस्सी जिन चैत्यालय-जिनबिंबेभ्यः चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय)

सलिल स्वच्छ शुभ गंध मलयते मधु झंकारे,
तंदुल शशिते श्वेत कुसुम परिमल विस्तारे,
क्षुधा हरन नैवेद्य रतन दीपक तम हारा,
धूप दहे वसु कर्म मोखमग, फल दातारा।
इम अर्घ्य करे शुभ द्रव्य ले, सेवक कनक थाल भरि,
श्री आदिनाथके चरण जुग, वसुविध अरचे भाव धरि।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

(गीता)

शुभ अर्घ्य सुंदर आठ द्रवका, कनकथाल भरायके,
बहु हर्ष धर मन हो प्रफुल्लित, भक्ति जिनगुण गायके।
भावीके भगवंत द्वय-जिन आयतनमें राजते,
तुम चरणकमल पवित्र पूजुं, दुःख सबही भाजते।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित धातकी विदेहस्य भावी भगवंत च जंबू भरतस्य भावी भगवंताभ्यां चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(नयनमालिनी)

आदि जिनेश्वर देव नमस्ते, भावीके द्वय जिन नमस्ते,
पुण्यवन्त पन मेरु नमस्ते, नन्दीश्वर जिनदेव नमस्ते;
वचनामृत द्वय आत्म भणन्ते, सम्यकूरत्नत्रय करन्ते,
जयमाला उत्तम सु भजंते, अष्ट द्रव्य धर पूज करन्ते।

(सुन्दरी)

बहिनश्री वचनामृत मंगलम्,
करे प्रशंसा श्री गुरुजी स्वयम्।
भवन वचनामृत हो अद्‌भुतम्,
स्वर्णपुरमें हो नित मंगलम्।

धवलपट पर वह उत्कीर्ण हो,
भावना भक्तोंकी सफल हो।
गुरुजी देत सु आशिष मंगलम्,
करें शिलान्यास गुरुवर स्वयम्।

भक्तजनकी हुई यह भावना,
गुरुके वचनामृत भी हो यहाँ।
बने नंदीश्वर जिनधामजी,
पंचमेरु भी हो साथजी।

भावी जिनवर थापन हो यहाँ,
गुरु-स्मृति अद्‌भुत हो तब महा।
गूंजा स्वर्णमें जयजयकारजी,
स्वर्णपुरमें पधारे नाथजी।

करें नित-नित नई-नई भक्तियाँ,
मात उरमें छा रही खुशियाँ।

जिनजी शाश्वत अष्टम द्वीपके,
स्वर्णपुरीमें मंगल राजते।
पंचमेरुके अस्सी जिनजी,
ऋषभजिन अरु भावी धातकी।
जंबू भावी श्री महापद्मजी,
करत हैं हम स्तुति गानजी।

शोभते वचनामृत द्वय यहाँ,
गुरुकी चित्रावली अद्भुत महा।
आदिजिनकी भवावली है यहाँ,
गुरुके नव भव भी अंकित यहाँ।
ज्ञान देत हैं श्री धरसेनजी,
शोभते गोमटेश मुनीन्द्रजी।
दर्शनीय भवावली वीरकी,
भव्यको प्रेरें पुरुषार्थजी।
बना दिव्य जिनालय मोहना,
सफल हुई भक्तोंकी भावना।
कृपा बरसी गुरु अरु मातकी,
पधारे श्री जिनवृंद महानजी।

हुई धन्य धरा सौराष्ट्रकी,
फैली जय जिन कुंद-कहानकी।

ॐ ह्रीँ सुवर्णपुरी तीर्थेषु नंदीश्वरजिनालये विराजित नंदीश्वर-पंचमेरु सर्व जिनेन्द्रेभ्य: आदिनाथ जिनेन्द्राय, धातकी विदेहस्य भावी भगवंत च जंबू भरतस्य भावी भगवंताभ्यां चरणकमल पूजनार्थे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस असार संसारमें तारणतरण जिहाज,
तुम्हें भक्तिसे पूजते सुर नर मुनिवर राय।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री धातकी-विदेह-भावी जिनवर पूजा

(अडिल्ल छंद)

धातकीखंड महान सुसुंदर जानिये,
बत्तीस क्षेत्र विदेह जहाँ परमानिये;
भावीके भगवान विराजित है तहाँ,
आह्वानन तिन करूं, प्रभु तिष्ठो यहाँ।

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्; अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(गझल)

हिमानिका लिया पानी, समानी चंद सीतानी,
दिया धारा जु हित सानी निशानी सौख्य अमलानी;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(जलं)

हरी चंदन कदलिनंदन, घसो आताप हरि फंदन,
चढाऊं पद्म जगवंदन, लहौ निर्वाण निर्फंदन;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(चंदनं०)

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति-किरण लज भागे,
किधौं जो पुण्य तुम त्यागे, परो यह रस अति जागै;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(अक्षतं०)

सुमन अति सुमनसे ल्याऊं, सुमनके सुमनसे ध्याऊं,
सु मनमथको हरो पाऊं, निजानंदात्म गुण गाऊं;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(पुष्पं०)

ये अक्षक पक्षको लक्षक, सुभक्षक स्वक्ष क्षुधनक्षक,
धरो नैवेद्य है दक्षक, निकक्षक कर्म चित्तरक्षक;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(नैवेद्यं०)

चढाऊं दीप तम नाशै, उडे कज्जल रु परकाशै,
जो आये नाथके पासे, उरघ तत्काल ही जासै;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(दीपं०)

तगर कृष्णागरु लेऊं, वरंगी वह्निमें खेऊं,
उडै जो धूम्र ईम बेऊं, भगे अघ चरण तुम सेऊं;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(धूपं)

फल सु दाडिम नारंगी, अभंगी पुंगी बहु रंगी,
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहे पद अचल निरसंगी;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(फलं)

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्य जुत आरती कीने,
हरो आरत कृपाभीने, कटै जंजाल दुख दीने;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(अर्घ्यं)

जयमाला

(जिनेश्वर बसो हृदयके माँहि...)

भावी तीरथनाथकी जी महिमा अतुल महान,
सुर-नर-मुनि जिनके सदा जी, प्रणमें निशदिन पाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

द्वीप धातकी खंडमें जी, विदेहधाम सुख खान,
विचरे तीर्थंकर प्रभु जी, करते भवि कल्याण,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य दिवस घडी धन्य है जी, धन्य धन्य अवतार,
भावी जिनवर चरणमें जी, लाग्यो चित्त बडभाग,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य युगल पद होय तब जी, मैं पहुंचुं तुम पास,
धन्य हृदय हो ध्यानतें जी, ध्याऊं निज हित काज,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

दरश करत तव चरणके जी, चक्षु धन्य तब थाय,
सफल करणयुग होत तब जी, वचन सुने जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

पूज करूं तव चरणकी जी, करयुग धनि तब थाय,
शीस धन्य तब ही हुये जी, नमत चरण जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

मैं दुखिया संसारमें जी, तुम करुणानिधि देव,
हरे दुख यह मो तणो जी, करी हों तुम पद सेव,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

स्वरूप तिहारो हृदय विषे जी, धारूं मन वच काय,
भवसागरको भय मिट्यो जी, यातें त्रिभुवन राय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

भावि जिनवर चरणकी जी, भरी भक्ति उर मांहि,
निजस्वरूपमय कीजिये जी, भव संतति-मिट जाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

સહજ ચિદાનંદ.

जिनदर्शन आदि छह कार्य श्रावकके प्रतिदिन होते हैं। यहाँ सम्यग्दर्शन सहित श्रावककी मुख्य बात है; सम्यग्दर्शनके पूर्व जिज्ञासु भूमिकामें भी गृहस्थों द्वारा जिनदर्शन-पूजा-स्वाध्याय आदि कार्य होते हैं। जो सच्चे देव-गुरु-शास्त्रको नहीं पहचाने, उनकी उपासना नहीं करे, वह तो व्यवहारसे भी श्रावक नहीं कहलाता।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

धातकीखण्डे विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर

भावी मुख्य गणधर पूजा

(गीता)

गणधर बिना खिरती नहीं, है वाणी श्री जिनदेवकी,
बनते हैं वे गणनाथ, जो दीक्षा लहे उन जिन थकी,
जो बीज पदके श्रवणसे, द्वादशांगकी रचना करें,
उन प्रमुख गणधर भावीको, हम पुष्पसे थापन करें।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र अवतर अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा)

निर्मल जलसे कनकझारी भर गुरुके चरण चढाऊँ,
चरण पूजतें गणधरजीके भव समुद्र तिर जाऊँ,
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

अगर चंदन भर भर लाऊँ, शीतल गंध सुरंग भर्यो,
जग उत्तम को करी वंदना आकुल दाह अपार हर्यो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

श्वेत अखंडित अक्षत लेकर, धरूँ पुंज तुम चरणोंमें,
अक्षयपदकी प्राप्ति हेतु मैं, आयो प्रभु तुम चरणोंमें।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

जुही केतकी पुष्प माल ले, चरणा तुमरे मैं ध्याऊँ,
धारत चरण लहे समतासर, मदन शांत मैं कर पाऊँ।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस मिष्ट पकवान सुधासम, ले आयो भर-भर थारी,
परम तृप्तिके हेतु चढाऊँ, क्षुधावेदनी क्षय कारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

शिखा दीपकी जगमग ज्योति, घन अंधियार मिटाती है,
मोह महातम दूर करनको, ज्ञायक ज्योति जगाती है।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगुरु धूपको खेवें, नभमें दशोदिशामें धुम्र उड़े,
दुरित कर्म जल जाएँ हमारे, अष्ट करमकी धूम उडै।

समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल दाडिम केला पिकवल्लभ खारिक मिष्ट अति लायो,
मोक्ष परमपद पावन कारण अति उत्साह सहित आयो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

अष्ट द्रव्यका थाल सजाया, साथमें है भक्ति भारी,
गुरु अर्चना नित-नित करते, वांछित फल सुखकारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

पूर्व विदेही धातुकी, भावीके भगवंत,
उनके गणधर प्रमुख जो, उन्हें नम्हें नित संत।
बारह सभाके नाथ हो द्वादश अंग करतार,
तिनको पूजूँ भक्तिसे भवदधि पार उतार।

(राग : श्री नेमि जिनेश्वरदेव)

नमूं नमूं गणनाथ, सर्व हितंकर हो,
वंदन क्रोड़ो वार, सर्व शुभंकर हो।

श्रीभावी तीर्थेशके, तुम गणधर हो,
धर्म धुरंधर नाथ, ध्वनि तुम झेलत हो।
त्रय गुप्ति, समिति पांच, मदसे रहित ही हो,
सातों भयसे मुक्त, महाव्रतधारी हो।
चौसठ ऋद्धि निधान, आनंद कंदहि हो,
दीप्त तप्त ऋद्धि धार, महा द्युतिवंतहि हो।
अक्षीण महानस ऋद्धि, के प्रभु धारक हो,
अमृतस्रावी ऋद्धि, धारी मुनिवर हो।
अस्ति नास्ति पूर्व-ज्ञानके धारी हो,
चार ज्ञानके धारी, अचरजकारी हो।
धातकी विदेही नाथ, के सुत प्यारे हो,
प्रमुख हो गणनाथ, भवदधि तारे हो।
राजकुंवरके मित्र, थे तुम पूरवमें,
श्रेष्ठीपुत्र देवराज, आए भारतमें।
गुरु का'नका अवतार, भवीके भाग्य अहो,
गाती प्रभु गुणगान, चंपा मात अहो।
धातुकी विदेही देव, के गणनाथ विभो,
मेटो मेरे दुःख, भवदधि तार प्रभो।
चक्षु हुए मुझ धन्य, तुझ दर्शन पायो,
धन्य अहो! अवतार, तुम ढ़िग मैं आयो।
धन्य मेरी रसना, तुम गुणगान करुँ,
शिवपद मागूं नाथ, अंतर आश धरूं।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महाअर्घं नि०

भावी गणधरदेवकी, भक्ति करें मन लाय,
रिद्धि सिद्धि सब प्राप्त हो, शीघ्र मोक्षसुख पाय।

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जम्बूद्वीप रचना

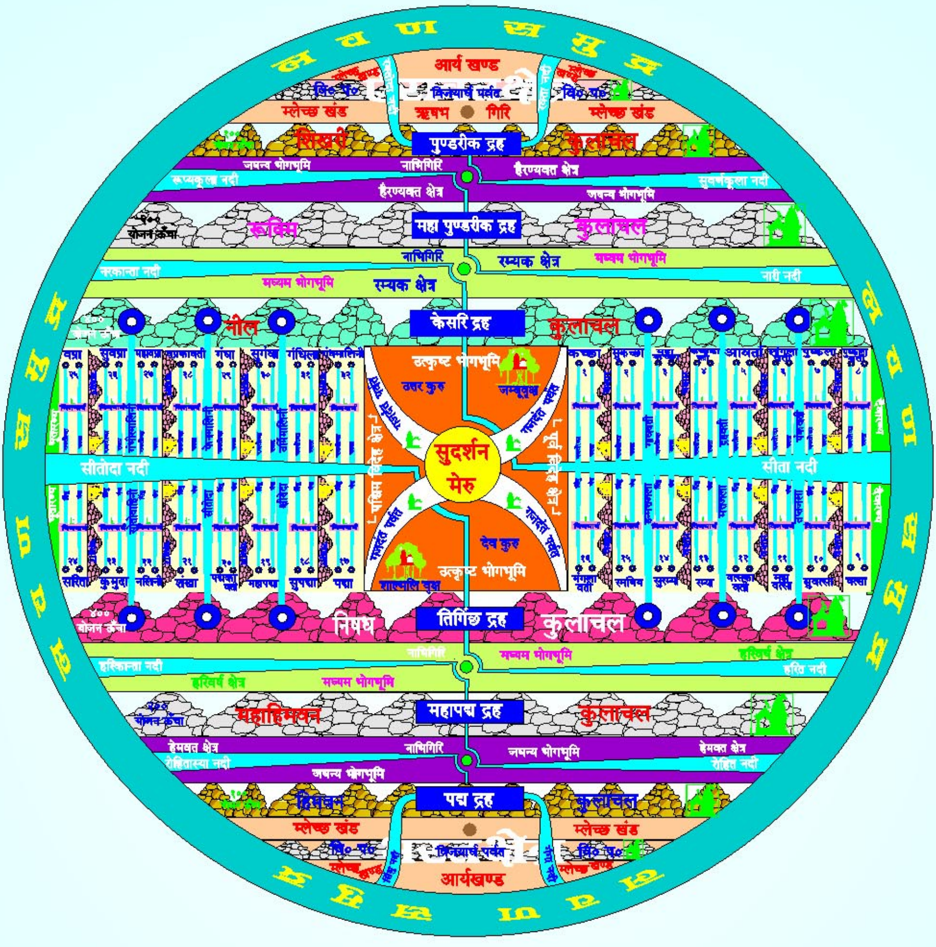

- उत्कृष्ट भोगभूमि
- मध्यम भोगभूमि
- जघन्य भोगभूमि
- ऐरावत क्षेत्र (ऊपर)
- भरत क्षेत्र (नीचे)
- विदेहक्षेत्र
- पर्वत / कुलाचल
- नदी
- द्रह (कुंड-सरोवर)
- गजदंत
- लवण समुद्र
- ऋषभ गिरि

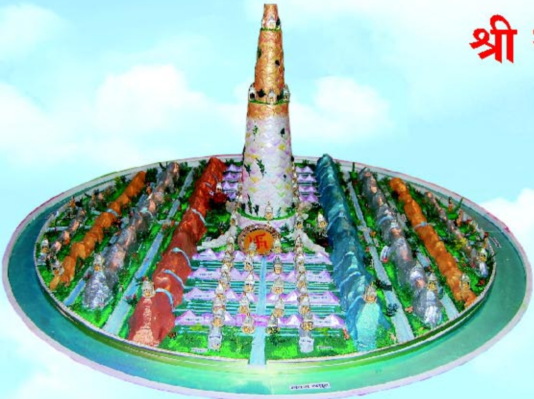

श्री जम्बूद्वीप-बाहुबली योजना
अंतर्गत
जम्बूद्वीपके शाश्वत
जिनालय-जिनबिम्ब

जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने स्थापयिष्यमान

जम्बूद्वीप संबंधित
सर्व शाश्वत जिनेन्द्र पूजा

(अडिल्ल)

भारतवर्षके पश्चिम दिशमें जानिये,
अनुभूति तीरथ जग उत्तम मानिये।
यहाँके शाश्वत जंबू संबंधित जिनजी,
आह्वानन विधि करुं हरष उर धारजी।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप संबंधित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिन प्रतिमा: ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप संबंधित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिन प्रतिमा: ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप संबंधित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिन प्रतिमा: ! अत्र मम सन्निहिता: भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(कुसुमलता छंद)

सरस मनोहर उज्ज्वल जल ले, क्षीरोदधि ले लावत आय,
रत्नकटोरीमैं सो धरकै, पूजत श्री जिनवरके पाय।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन दाह निकन्दन, केसर झारी रंग भरी,
श्रीजिन चरण सु पूजत भविजन, भव आताप सु दूर करी।

जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

देवजीर सुखदास सु अक्षत, मुक्ताफल सम लीजे,
मन वच काय लाय जिनचरणन, पुंज मनोहर दीजै।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, फैले गन्ध दसों दिश आय,
अमर समूह जजैं जिनचरणन, पुंज मनोहर दीजै।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरी पुवा घृतके लाडू, फेनी खाजे तुरत बनाय,
क्षुधा रोग निवारण कारण, श्री जिनवर पद पूज रचाय।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जोत होत दसहु दिश, मणिमई दीप अमोलक लाय।
करत आरती श्री जिन आगै, नित्य प्रभुगुण मंगल गाय।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमाः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुगन्ध सु दशविध, फैली परम लता सु अपार,
खेवत धूप जिनेश्वर आगै, जलै कर्म चहुँ गत दातार।।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमाः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता, किसमिस दाख छुहारे लाय,
पूजत फल जिनचरण मनोहर, शिवफल पावत कर्म खिपाय।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमाः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल चन्दन अक्षत प्रसून ले, नेवज दीप धूप फल सार,
अर्घ बनाय जजों श्री जिनवर, दास सदा तिनपर बलिहार।
जम्बूद्वीप सम्बन्धि शाश्वत, जिनवर हैं शत तीस महान,
राजे अनुभूति तीर्थ महीं, गुरुवरजीकी है कृपा महान।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमाः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम्०

प्रत्येक अर्घ

मेरु सम्बन्धित जिनेन्द्र भगवंतका अर्घ

(छंद चंडी)

सुदर्शन जम्बूद्वीप नमस्ते, भद्रशाल, नन्दनसु नमस्ते,
सौमनस रु पाण्डु नमस्ते, चतुःवने चतुः दिशा भणन्ते,
दिशा प्रत्येक जिनगृहं नमस्ते, तिहँ जिनबिम्ब शत आठ नमस्ते,
कहानगुरु व मात नमस्ते, भाव सहित भव्य पूज करन्ते।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य सुदर्शन मेरु सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमाः अर्घं निर्वपामीति०

जम्बू-शाल्मलिवृक्षे जिनमन्दिर-जिनबिम्ब अर्घ

(वेसरी)

जम्बूद्वीप भोग भूमि मांहीं, उत्तर जम्बू वृक्ष रहाहीं,
दक्षिण शाल्मलि वृक्ष सुजानो, जिनमन्दिर तिन प्रत्येक जानों।
अष्ट द्रव्यसे पूज रचाके, वन्दन-स्तुति-नाच-सुगाके,
तिन जिनबिम्ब पूज हर्षाके, निज आतमका स्वाद सुचाखे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य जम्बू-शाल्मलि वृक्ष सम्बन्धित शाश्वत जिनमंदिरे जिनप्रतिमाभ्याम् अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेहक्षेत्रके चार तीर्थंकर भगवंतोंका अर्घ

(अडिल्ल)

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रके जानिये,
चतु र्जिन शाश्वत तिन नामके मानिये।
सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहुजी,
तिनके पूज चरण अघ जावे नाशजी।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीप सम्बन्धित विदेहक्षेत्रे विद्यमान श्री सीमंधर, श्री युगमंधर, श्री बाहु, श्रीसुबाहु जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४-गजदंत संबंधित जिनेन्द्र भगवंतोंका अर्घ

(छंद : गीतिका)

श्री जम्बूद्वीप सुमेरु गिरिको, मूलमें गजदंत सही।
मेरुसे कुलाचलेको, छूते चतुःतीर्थ कही।
तिन बिम्ब जिनके ऊपरे शुभ, रतनरूप बखानिये।
मैं जजों मन-वच-काय लेकर, अर्घ वसुविध जानिये॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य चतुर्गजदंत सम्बन्धित सर्व शाश्वत जिनमंदिरे जिनप्रतिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१६ वक्ष्यार सम्बन्धि जिनबिम्ब अर्घ

(जोगीरासा)

अष्ट द्रव्य ले, कनकथालमें, गिरिवृक्षारे जाऊँ,
मन-वच-काय लगाय भावसों, पूजा भव्य रचाऊँ;
मेरु सुदर्शन पूरव-पश्चिम, गिरि वक्षार विराजे,
षोडश तिन पर जिनगृह सोहे, पूजत भव दुःख भाजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य षोडश वक्ष्यार सम्बन्धित सर्व शाश्वत जिनमंदिरे जिनप्रतिमाभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

३४ विजयार्ध पर्वत सम्बन्धि जिनमन्दिर अर्घ

(जोगीरासा)

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण, अनुपम अर्घ बनाये,
द्वय त्रयदश विजयार्ध विदेहके, पूरव-पश्चिम जाये,

भरत-ऐरावतके वैताढ़े, कुल चोंतिश सुगाये,
इन सब गिरि पर जिनगृह सोहे, पूजत भव दुख जाये॥

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य ३४ विजयार्ध सम्बन्धित सर्व शाश्वत जिनमंदिरे जिनप्रतिमाभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

६ कुलाचल सम्बन्धि जिनमंदिर अर्घ

(जोगीरासा)

जम्बूद्वीपे षष्ट कुलाचल उत्तर-दक्षिण मानों,
तिन पर सिद्धकूट है इक-इक, रतनमयी जिन जानों,
स्वच्छ सुगंधित अष्ट द्रव्य ले, प्रभुके पाद सुआनों,
तिन सब जिनके चरणकमलको पूजत भव दुःख हानों।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य षट् कुलाचल सम्बन्धित सर्व शाश्वत जिनमंदिरे जिनप्रतिमाभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत-ऐरावत सम्बन्धि शाश्वत चौबीसीका अर्घ

(जोगीरासा)

श्रद्धा, भक्ति मन-वच-तनसों, भरत-ऐरावत जाऊँ,
तिनकी कर्मभूमिके मांहि, जिन चौबीसी गाऊँ।
ये चौबीसी तीनों कालमें भरत-ऐरावत होई,
तिन चौबीसी अष्ट द्रव्यसों, पूजत भवदुःख खोई॥

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य भरत-ऐरावत क्षेत्रे शाश्वत द्वि-चतुर्विंशति जिनप्रतिमाभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(त्रोटक)

द्वीप जंबू तनो, जिन शाश्वत घनो,
पूजके मैं तिन्हों, पाऊँ सुखशिव तनो।
चार विदेह तनो, शाश्वते जिन भनो,
थाप तिनको प्रभो, पूज भक्ति भावसो।
भरत'रावत महीं, चव बीस युग जिनो,
सर्व जिन थापके, चरण सेवा चहो।

(छंद : नयनमालिनी)

जै जै सुवर्ण तीर्थ महान, जहाँ गूँजे वाणी आत्मप्रधान।
कृपा गुरुका'न भगवंत सार्थ, मुमुक्षुजन पोषे आत्मार्थ॥

प्रभु कृपासे सुवर्णके भक्त, भाये हो जम्बूद्वीप जिनोक्त।
जम्बू विषयक शाश्वत जिनेन्द्र, साथमें हो, बाहुबली मुनीन्द्र॥

आशीष देते गुरु अरु मात, तीर्थ स्वर्ण पश्चिम उत्तम भांत।
मेरु सुदर्शनजी है विशाल, पांडुक, नंदन, सौम, भद्रशाल॥

चतु मंदिर इक-इक मांही, करत दर्शन पाप पलाहीं।
चारण मुनि रु देव तहँ जात, दर्श जिनेन्द्र विध-विध भांत॥

पासमें है चतुःगजदंत, मंदिर अकिरतम हैं महंत।
जम्बू, शाल्मलि वृक्ष सुथान, हैं वे पृथ्वीकाय महान॥

वृक्ष पे राजे जिनजी महान, करें पूजा भक्ति सुआन।
पासमें विदेह बत्तीस जान, जहाँ चोथा काल नित्य सुजान॥

सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु, शाश्वत नाम ये पूज रचाऊँ।
सोलह वक्ष्यार, वैताढ़ बत्तीस, इन पर अकृत्रिम मंदिर ईश॥

जम्बू सम्बन्धक षष्ठ कुलाचल, उनके सिद्धकूट जिन अचल।
गुरु अरु मात सदा जाते वहाँ, लेते नित-नित शुभ लाभ वहाँ॥

दक्षिण उत्तर भरतैरावत, अर्ध कल्पकाल चौबीस जिनंद।
चौबीसी वहाँ शाश्वत जान, ऐसे जिनेन्द्रको पूजें आन॥

इन क्षेत्रमें वैताढ़ जान राजे जिणंद अचल महान।
ऐसे एकसो तीस जिणंद, स्वर्णमांही राजत हम वंद॥

गुरु अरु माता स्वर्णे पधारो, पूजा जम्बू 'जिन'की रचाओ।
पूजुं जम्बूके सर्व जिनेन्द्र, साथमें रु प्रत्येक प्रत्येक॥

जय जय स्वर्णतीर्थ महान, जो है तत्त्व रु भक्तिप्रधान।
ये सर्व देव-गुरु परताप, जय जय जंबू जिनवर आप॥

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरी तीर्थेषु निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने स्थापयिष्यमान जम्बूद्वीपस्य सम्बन्धित सर्वे शाश्वत जिनमंदिरस्थ जिनप्रतिमाः अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जम्बू विषयक जिनवरा, शत अरु तीस भणंत,
दो आशिष प्रभुजी हमें, हरो सभी दुःख दंद॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री जम्बूद्वीप-बाहुबली योजना
अंतर्गत
श्री बाहुबली मुनीन्द्र

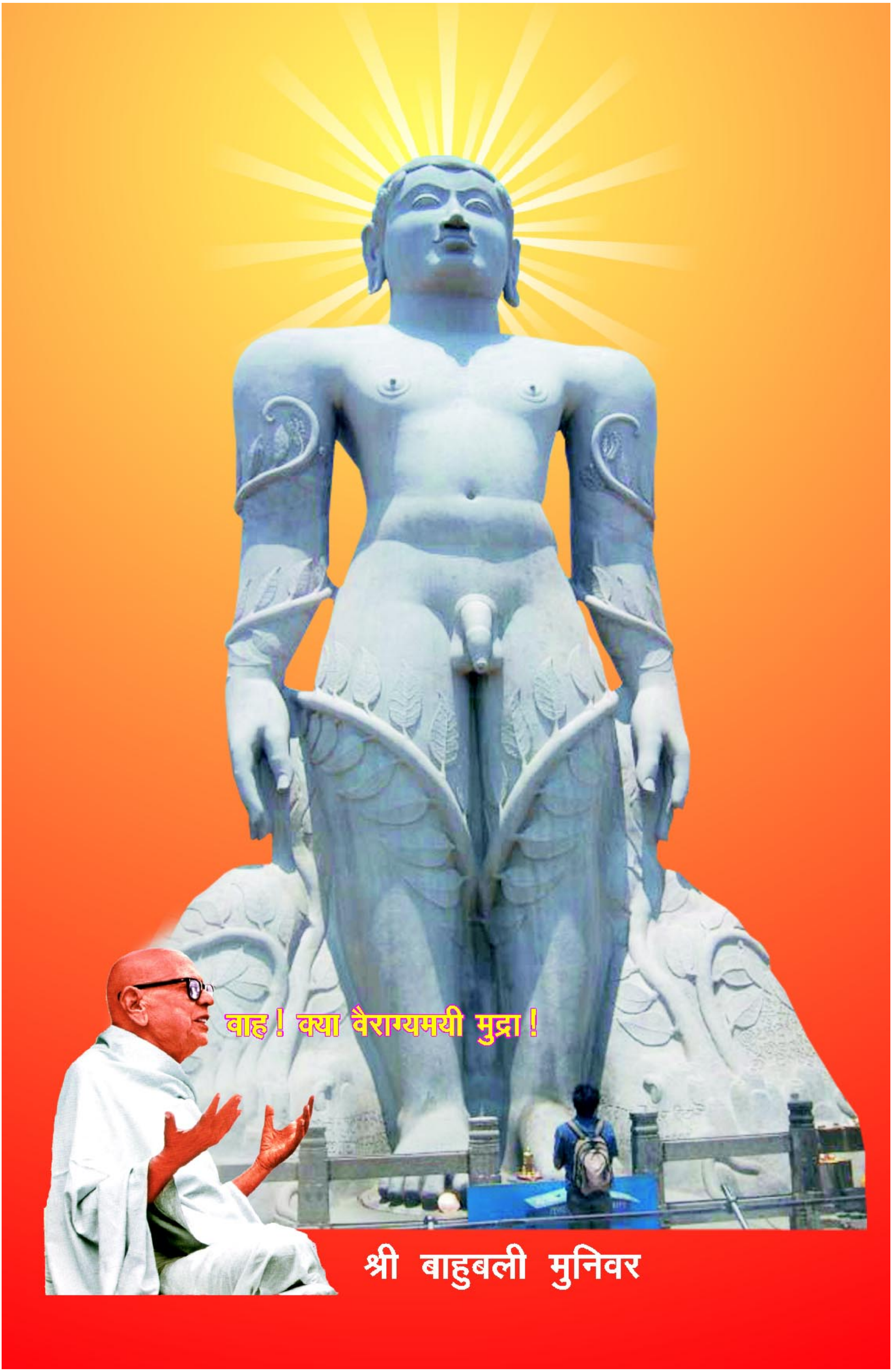
वाह ! क्या वैराग्यमयी मुद्रा !
श्री बाहुबली मुनिवर

जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने स्थापयिष्यमान

भगवान बाहुबली मुनीन्द्र पूजा

(राग : चेतनरूप अनूप अमूरत...)

आदि जिनेश्वरके सुत हो तुम, मात सुनंदाकी नयनके तारे,
इसही कालमें बाहुबलीजी, सर्वप्रथम तुम मोक्ष पधारे।
गुरु कहानके ही परतापसु, स्वर्णपुरे प्रभु आप जु आये,
तिष्ठो अत्र मुनीन्द्र हमारे, धन्यभाग्य तुम दर्शन पाये॥

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद जोगीरासा)

निरमल पानी मैं कर आनी, गंगा जल सो भाई,
कनक झारिका में करिके शुभ, अपने चित हरषाई;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शुभ जल ते घसिके भवि, और कपूर मिलाई,
गंध भली अलि की मन मोहन, रतन झारि भरि भाई।
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल से खंड बिना शुध, अक्षत लेकर भाई,
पूजनको अपने कर लेकर, मन वच तन हरषाई;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल मनोज्ञ भले अधिकारी, नाना भांति सु प्यारे,
जैसी शोभा कल्प पुष्पकी, तैसी ही यह धारे;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस पूर मनोज्ञ तुरत कर, शुभ नैवेद्य बनायो,
खाजा फेनी मोदक आदिक, सो अपने कर लायो;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक तमके हारी सुखदा, रतन थाल भरलायो,
तिन प्रकाशतें घटपट दीखै, शुभचित अति हरषायो;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध मिलाय सु दशधा, और कपूर सु भाई,
जाके खेवत धूम शिखा नभ, फैल रही महकाई;

गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, पिस्तादिक शुभ भाई,
इन आदिक बहुते फल लेके, पूजनको मन लाई;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत प्रसून ले, चरु दीपक सुखदाई,
धूप फलादि मिलाय दरब वसु, अर्घ बना हर्षाई;
गुरु कहानके, स्वर्णपुरीमें, बाहुबली जिन राजे,
भव्य सुपूजें विनय भावसुं, शिवसुखपावन काजे।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

बाहुबली तपस्वीजी, पधारे स्वर्णिम धाम;
भाग्य खिले है भक्तके, सेवे नित अविराम।

(छंद : सुन्दरी)

तृतीय हुण्डासर्पिणी अन्तमें, नाभिराय सपुत ऽयोध्यामें।
भये तीर्थंकर आदिनाथजी, सुत हुए भरतादि यशस्वीजी।।

जनमते भुज चुंबत पृथ्वीजी, निमित्तज्ञानी वदे होंगे चक्रीजी।
भरत हुए ऐसे महानजी, चरमशरीरी भाई अन्यजी।।

बाहुबली थे सुत सुनंदाजी, अरु सुशील सुसुंदरी बहनाजी।
कामदेव भये बाहुबलीजी, पराक्रमी अरु महा वीरजी।।

ऋषभ पाये केवलज्ञानकम्, भरत पाये चक्र रत्नकम्।
पुत्र रत्न हुआ बधाईजी, तीन बधाई साथमें पाईजी।।

भरत आनंद पाय अपूर्वकम् प्रथम पूजन की आदीशजी।
चक्रसुँ दिग्विजय पाईया, चक्र न प्रवेश ऽयोध्या पाईयो।।

बंधु सर्व नमत यदि भरतजी, चक्र ऽयोध्या प्रवेश पायेजी।
निन्यानवे सुन बात दूतकी, दीक्षा लेत भये निर्ग्रन्थकी।।

बाहुबली सुन बात दुतकी, कर चले ललकार युद्धकी।
सैन्यजनकी रक्षा हेतुसे, दृष्टि, जल, मल्लयुद्ध हो भाईमें।।

भरत हारे तीनों युद्ध महीं, चक्र मारा बाहुबली पहीं।
चक्र घात बिना आया तहीं, बाहुबलीजी भए विरक्तहीं।।

बाहुबली तप करें अष्टापदे, चरणमें उरगके बिल बने।
देह पर बेलिया चढ़ गई, फिर भी ध्यान मुद्रा नहीं डिगी।।

भरत चक्री दर्शनको चले, पूज बाहुबलीको भक्तिसे।
पाया बाहुबली केवलज्ञानकम्, प्रथम मोक्ष गए कैलाशकम्।।

ऐसे बाहुबली विंध्यगिरे, भव्यजनके मन मोहित करे।
सहस्र वर्ष हुए चामुण्डजी, अन्य नाम था राय 'गोम्मट'जी।।

मात प्रेम अरु स्वप्न कारणम्, बिम्ब विंध्यगिरि उत्कीर्णकम्।
बने ईश्वर वे 'गोम्मट'के, हुए श्री 'गोम्मटेश' प्रसिद्ध वे।।

सन् प्रतिष्ठा शत नव क्यासीजी, कृपा बरसी आचार्य नेमिकी।
विश्वप्रसिद्ध भये मुनिराजजी, गुरु कहान किया अभिषेकजी।।

हुबहु बने है 'गोम्मटेश'जी, स्वर्णके भगवान श्री बाहुबली।
गुरु व माता पूजत ईशको, करें प्रतिष्ठा स्वर्णमें बाहुको।।

स्वर्णधरा ये साधना का'नकी, बना है पश्चिम 'गोम्मट' तीर्थजी।
होत पावन यात्री दर्शसे, गुरु प्रताप विश्वमें गूंजते।।

ॐ ह्रीँ स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

स्वर्णपुरी पावन भई, चरण बाहु मुनिराज,
कृपा करो प्रभु ऐसी अब, बने आपरूप आज।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भरतक्षेत्र जागृत हुआ, कहान गुरु परताप,
आतम-सुख हम चाहते, लगा मोहका ताप।

प्रकट आत्म स्वरूप है, ऐसे श्री जिनराज,
गुरुजी लाये नेकविध, स्वर्णिम ये जिनराज।

जयवंतो जयवंत हो भव्यके तारणहार,
भक्त दासको तारियो, जिन-का'न अरु मात।

(छंद चंडी)

स्वानुभव तीर्थधाम नमस्ते, अध्यात्म गुरुवाणी नमस्ते,
सीमंधर-कुंद कृपा नमस्ते, समयसार जिनवाण नमस्ते।

वीर-कुंद कृपा गुरु पाकर, जिनजी अरु ध्रुव धाम दिखाकर,
'तू परमातम' नाद सुनाकर, हुए हमारे मार्ग दिवाकर।

ऐसे धातुकी जिन नमस्ते, सीमंधर, शांति, पद्म नमस्ते,
शिवरमा प्रभु नेमि नमस्ते, पार्श्व, चन्द्र, शुद्ध–सिद्ध नमस्ते।

जिनवर धर्मसभा नमस्ते, उन्नत मानस्तंभ नमस्ते,
कर्मशत्रु चकचूर नमस्ते, परमागम जिन वीर नमस्ते।

कुंद चरण अभिराम नमस्ते, कुंद-सुधा-पद्म, गिरा नमस्ते,
नंदीश्वर-पंचमेरु नमस्ते, आदिप्रभु, द्वयभावी नमस्ते।

बारह अंगका सार नमस्ते, वचनामृत द्वय सदा नमस्ते,
महा तपस्वी यती नमस्ते, धीरवीर बाहुबली नमस्ते।

जम्बूद्वीप जिन बिम्ब नमस्ते, जीवंतस्वामी चर्तु नमस्ते,
भरत-ऐरावत क्षेत्र नमस्ते, चौबीसी त्रयकाल नमस्ते।

विविध जिनेश्वर देव नमस्ते, वीर-कुंदामृत वाणी नमस्ते,
निजात्म महिमा महा नमस्ते, तिन दाता गुरु कहान नमस्ते।

कृपा जिन-गुरु-वाण नमस्ते, मुक्ति सिखाई मात नमस्ते,
रहे सन्त जिनदास नमस्ते, करिये भवदधि पार नमस्ते।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरी तीर्थेषु सर्व जिनायतने विराजित सर्व कृत्रिम–अकृत्रिम–शाश्वत जिनप्रतिमाः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ऐसी मंगलमाल यह, जिन-गुरु-मात प्रताप,
भव-भव पाऊँ साथ तुम, स्वर्ग-मुक्ति दो आप।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आरती

卐 श्री सीमंधरजिननी आरती 卐

सुवर्णे सीमंधर भगवान...आरती उतारुं प्रभुनी;
मारा जीवनना साचा सुकान...आरती०

ज्ञान दरशन अनंत गुणधारी प्रभु,
दिसे लोक अलोक अेक बिंदु समुं;
अेवी ज्ञानज्योति झळके अगाध...आरती०

महावीर्य चारित्र गुण पूर्ण अहा,
नाथ आनंद सागरमां म्हाली रह्या;
प्रभु अचळ अखंड अकंप...आरती०

शांत शांत शीतळ देव मुद्रा अहो,
जगे झळहळती ज्ञानज्योत तारी प्रभो;
प्रभु सागर समान गंभीर....आरती०

卐 समवसरण आरती 卐

सीमंधर जिनराय नमस्ते, कुंदकुंद मुनिराज नमस्ते।
सीमंधर कुंद मिलन नमस्ते, समवसरण जिनधाम नमस्ते॥
चारघातिया घात नमस्ते, राग द्वेष दो टारि नमस्ते।
केवल दर्शन पाय नमस्ते, परमौदारिक काय नमस्ते॥
वहुविध पुण्य उपाय नमस्ते, जय जय जय सुखदाय नमस्ते।
प्रातिहार्य वसु पाय नमस्ते, तरु अशोक हो पास नमस्ते॥
सुर वरसावत पुष्प नमस्ते, वाणी खिरत जिनेश नमस्ते।
तिन छत्र शिरधार नमस्ते, ढोरत चौंसठ चमर नमस्ते॥
सिंहासन थिर देव नमस्ते, भामण्डल जिनराज नमस्ते।
बाजत दुन्दुभि द्वार नमस्ते, धर्मसभा जयकार नमस्ते॥
गुरुवरको प्रत्यक्ष नमस्ते, मात जातिस्मृतिज्ञान नमस्ते॥
स्वर्णपुरी तीर्थधाम नमस्ते, भक्तोंका जयकार नमस्ते॥

卐 मानस्तंभ आरती 卐

(राग : धन्य धन्य आज घडी)

मंगलकारी दिवस आया, मंगल घडी आज है, मानस्तंभ पधारे है मानस्तंभ पधारे है।

पूजा अर्चन हो आज मानस्तंभकी, आरती करते भव्य सीमंधरनाथकी (२)
वंदन, स्तवन, भक्ति पूजन, आरती उतारुं; मानस्तंभ पधारे है (२)

सौराष्ट्र देशकी, स्वर्णधरा पर, ये मानस्तंभजी अति मनहार है (२)
भक्तजन नाचो, गाओ, आरती उतारो, मानस्तंभ पधारे है (२)

गणधर देवा झुके जिन चरणमें, देव-देवी नृत्य करें प्रभु चरणमें (२)
साक्षात् विदेहके ये मानस्तंभजी, मानस्तंभ पधारे है (२)

घननन घंटा नाद गाजते, सुमधुरतालसे भक्तजन नाचते (२)
मानीका मान गले, ऐसा मानस्तंभ है, मानस्तंभ पधारे है (२)

गुरुवर कहान के परम प्रतापसे, भगवती मात के मंगल आशीषसे (२)
स्वर्णपुरी बन गया तीरथधाम रे, मानस्तंभ पधारे है (२)

સહજ ❀ ચિદાનંદ.

卐 सीमंधर जिन आरती 卐

(राग : आवी आवी धन्य घडी सोहामणी)

धन्य धन्य आजनी घडी सोहामणी, धन्य धन्य आजनी घडी रळियामणी,
पूजन आरती जिनवरदेवनी, धन्य धन्य आजनी घडी सोहामणी।

रत्नमणिना दीप प्रगटावी, गुणरत्नोनी आरती सजावी,
सोहे सोहे त्रिभुवननाथ चिंतामणि, धन्य धन्य आजनी घडी सोहामणी ।

भक्ति रचावीए, मंगल गान गाईये, सीमंधरदेवने रत्ने वधावीए,
आवो पधारो जिनवर अम आंगणिये, धन्य धन्य आजनी घडी सोहामणी ।

कहान गुरुदेवना मंगल आशीर्वाद छे, भगवती मातनो कृपानो वरसाद छे,
जिनवरदेवना गुण अपरंपार छे, धन्य धन्य आजनी घडी सोहामणी ।

卐 जिनवाणी आरती 卐

वीर हिमाचलतैं निकसी, गुरु गौतमके मुख कुंड ढरी है;
मोह महाचल भेद चली, जगकी जडतातप दूर करी है।
ज्ञान पयोनिधि मांही रली, बहु भंग तरंगनिसों उछरी है;
ता शुचि शारद गंग नदी प्रति, मैं अंजुलि कर शीश धरी है।।१।।

या जगमंदिरमें अनिवार, अज्ञान अंधेर छयो अति भारी;
श्री जिनकी धुनि दीपशिखा सम, जो नहिं होत प्रकाशन-हारी।
तो किस भांति पदारथ पांति, कहां लहते रहते अविचारी;
या विधि संत कहें धनि हैं, धनि हैं जिन वैन बड़े उपकारी।।२।।

श्री मुनि कुंद रचा जिसको, गुरु का'नको जो है भया उपकारी,
मात कहें धनि है धनि हैं यह समयसार महा हितकारी।
स्वाध्यायमंदिर स्वर्णपुरीमें, गुरु जिनवाणी मर्म बतायें,
सुनकर भव्य लखे निज आतम समयसार निजरूप बनाये।।३।।

❀

卐 ॐ जय जिनवरदेवा 卐

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ

दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ

आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ
पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ

कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

卐 जम्बूद्वीप की आरती 卐

(आओ सहु आरती उतारीए)

जम्बूद्वीप सुवर्णे पधारिया जी रे,
आवो सहु आरती उतारीए।
सुदर्शन मेरुना सोळ सोळ मंदिरो,
रत्नमणिना बिंब सोहता जी रे....आवो सहु...
गजदंत शिखरे जिनालय बहु शोभतां,
पूजन रचावीए भावथी जी रे....आवो सहु...
विजयार्द्ध पर्वत ने वक्षारगिरि पर,
मंदिरो अकृत्रिम सोहता जी रे...आवो सहु...
कुलगिरि पर्वतना मंदिरोनी दिव्यता,
शी शी करुं तुझ सेवना जी रे....आवो सहु...
रत्नमणिना दीपको लईने,
भावे प्रभुने पूजीए जी रे....आवो सहु...

卐 बाहुबली आरती 卐

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा, स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०

बार बार मास तपस्या करता, अंतरमां लवलीन,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०
भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीए श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०
महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०
स्वर्णपुरीमां बाहुबली देवा, स्वागत मंगलकार,
आवो आवो अम आंगणिये, रत्ने वधावुं आज....ॐ जय०

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम्;
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः,
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवन् जिनेन्द्रः॥६॥

(स्त्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याघयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्ञीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥७॥

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा॥८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ॥

(अथेष्ट प्रार्थना–मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ।।९।।

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ।।१०।।

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु ।।११।।

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण ।।१२।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।१।।

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।२।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।।४।।

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।५।।

अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।